सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि

PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

वर्ष–01 अंक–162 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, बुधवार 1 जुलाई 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

सु-विचार

"एक समय के बाद सुंदरता नहीं, मर्यादा और संस्कार आकर्षित करता है .... ।"

अज्ञात...

आईबी ग्रुप की कर्मचारी की बेटी महिमा राजपूत का मिशन शक्तिसैट में चयन

छत्तीसगढ़ से एकमात्र छात्रा, 108 वैश्विक प्रतिभागियों में भारत की 20 बेटियों में शामिल

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

आईबी ग्रुप की सुनहरा कल पहल एक बार फिर प्रतिभाओं को नई उड़ान देने में सफल रही है। आईबी ग्रुप, राजनांदगांव के कमर्चारी कीर्ति सिंह की पुत्री महिमा राजपूत का चयन प्रतिष्ठित मिशन शक्तिसैट के लिए हुआ है। भारत से चयनित 20 प्रतिभागियों में महिमा शामिल हैं। वे छत्तीसगढ़ की एकमात्र चयनित छात्रा हैं।

महिला नेतृत्व वाला वैश्विक अंतरिक्ष मिशन

मिशन शक्तिसैट एक वैश्विक, पूर्णतः महिला नेतृत्व वाला अंतरिक्ष मिशन है। इसमें विश्वभर से 108 छात्राओं का चयन किया गया है। अगस्त में नई दिल्ली में आयोजित आठ दिवसीय कायर्शाला में प्रतिभागी छात्राएं मिलकर मिशन शक्तिसैट उपग्रह का निर्माण करेंगी। इनमें से एक उपग्रह को चंद्रमा की कक्षा में स्थापित किया जाएगा। दूसरे को चंद्रमा की सतह पर उतारने के उद्देश्य से विकसित किया जाएगा। इनका प्रक्षेपण अक्टूबर में इसरो के श्रीहरिकोटा प्रक्षेपण केंद्र से किया जाएगा।

सुनहरा कल पहल का असर

आईबी ग्रुप ने महिमा राजपूत की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी है। संस्था ने बताया कि सुनहरा कल पहल के तहत कमर्चारियों के बच्चों को छात्रवृत्ति, शैक्षणिक सहयोग और प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है। इसका उद्देश्य बच्चों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर देना है। महिमा की सफलता इसी दूरदर्शी पहल का प्रेरक उदाहरण है।

एमडी बहादुर अली ने दी शुभकामनाएं

आईबी ग्रुप के एमडी बहादुर अली ने कहा कि कमर्चारियों के परिवारों के विकास में निवेश ही भविष्य के भारत के निर्माण की मजबूत नींव है। महिमा राजपूत की उपलब्धि न केवल उनके परिवार बल्कि आईबी ग्रुप, राजनांदगांव और छत्तीसगढ़ के साथ साथ पूरे देश के लिए गर्व का विषय है। उन्होंने महिमा के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

छोटे शहर से अंतरिक्ष तक का सफर

महिमा का चयन बताता है कि सही सहयोग और अवसर मिलने पर छोटे शहरों की बेटियां भी अंतरिक्ष तक पहुंच सकती हैं। आईबी ग्रुप की यह पहल अन्य संस्थानों के लिए भी मिसाल है।

एमसीयू में तनाव प्रबंधन और डिजिटल वेलबीइंग पर कार्यशाला आयोजित

प्रकृति से जुड़ें, खुश होकर करें हर काम : हितेश

नई दृष्टिबिंदु / भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सहयोग से स्ट्रेस मैनेजमेंट, डिजिटल वेलबीइंग, डी–एडिक्शन और वैल्यू बेस्ड एजुकेशन विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नालंदा पुस्तकालय में हुए कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षकों और अधिकारियों ने भाग लिया।

बच्चों से भावनात्मक जुड़ाव रखें: हितेश

कार्यक्रम में लेखक एवं इमोशनल एक्सपर्ट हितेश टुटेजा ने कहा कि आज हम प्रकृति से दूर हो गए हैं। इसलिए सबसे पहले हमें खुद को बदलना होगा। शिक्षक के रूप में बच्चों से इमोशनली कनेक्ट होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमें जो भी कार्य करना है, खुश होकर करना चाहिए। खुद को अंदर से जानने और पहचानने की जरूरत है। तनाव से मुक्ति के लिए आत्मचिंतन और सकारात्मक सोच जरूरी है।

हेमा दीदी ने कराया मेडिटेशन

इसके बाद ईश्वरीय विश्वविद्यालय भोपाल की हेमा दीदी ने सभी प्रतिभागियों को मेडिटेशन कराया। उन्होंने राजयोग के माध्यम से मानसिक शांति और एकाग्रता बढ़ाने के टिप्स दिए। डिजिटल वेलबीइंग पर चर्चा करते हुए बताया गया कि मोबाइल और सोशल मीडिया का सीमित और सार्थक उपयोग जरूरी है।

कुलसचिव सहित कई अधिकारी रहे मौजूद

कार्यक्रम में एमसीयू की कुलसचिव प्रो. डॉ. पी. शशिकला, वित्त नियंत्रक राजेश सिंह समेत कई अधिकारी और शिक्षक उपस्थित थे। ईश्वरीय विश्वविद्यालय से ममता दीदी और नारायण जी भी कार्यक्रम में शामिल हुए।

संजय द्विवेदी ने किया संयोजन

कार्यक्रम का संयोजन जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. डॉ. संजय द्विवेदी ने किया। संचालन मीडिया प्रबंधन विभाग के अध्यक्ष प्रो. डॉ. अविनाश वाजपई ने किया। अंत में प्रतिभागियों ने तनाव प्रबंधन और मूल्य आधारित शिक्षा को दैनिक जीवन में अपनाने का संकल्प लिया।

राहुल गांधी का 'मिशन 2029' तैयार : 6 राज्यों पर फोकस, संगठन में बड़े बदलाव के संकेत

सुस्त प्रभारियों की छुट्टी तय, प्रियंका गांधी को गठबंधन की कमान, 'सॉफ्ट हिंदुत्व' से किनारा

आलोक तिवारी / नई दिल्ली

2024 के लोकसभा चुनाव परिणामों के बाद कांग्रेस के तेवर बदल गए हैं। पार्टी के अंदरखाने से मिली जानकारी के मुताबिक राहुल गांधी ने 'मिशन 2029' के लिए संगठन का पूरा ढांचा बदलने की रणनीति तैयार कर ली है। इसका मुख्य लक्ष्य 2029 के आम चुनाव से पहले 6 अहम राज्यों के विधानसभा चुनाव जीतना है।

रिजल्ट आधारित संगठन, नाकाम प्रभारियों पर गाज

कांग्रेस में अब तक चुनाव हारने के बाद भी बड़े नेता पदों पर बने रहते थे। सूत्रों के अनुसार राहुल गांधी ने साफ किया है कि अब केवल 'रिजल्ट और कमिटमेंट' देखा जाएगा। कर्नाटक और केरल में हाल के फैसले इसी रणनीति का हिस्सा माने जा रहे हैं। संदेश साफ है कि जिम्मेदारी नहीं निभा पाने वाले नेता पद छोड़ें।

वैचारिक वापसी: 'सेंट्रिस्ट कांग्रेस' का रास्ता

बीजेपी के नैरेटिव को काटने के लिए कांग्रेस 'सॉफ्ट हिंदुत्व' का सहारा लेती रही है। अब पार्टी 1952 से 1990 वाली 'सेंट्रिस्ट' यानी मध्यमार्गी विचारधारा की ओर लौट रही है। इसके तहत भूपेश बघेल, सचिन पायलट, डीके शिवकुमार और जीतू पटवारी जैसे जमीन से जुड़े नेताओं को राष्ट्रीय स्तर पर ज्यादा जिम्मेदारी दी जाएगी।

प्रियंका गांधी संभालेंगी गठबंधन

राहुल गांधी के मास्टरप्लान में प्रियंका गांधी की भूमिका अहम होगी। उन्हें 'अलायंस और कोऑर्डिनेशन' की जिम्मेदारी दी जा रही है। उनका काम पुराने नेताओं को वापस लाना, क्षेत्रीय दलों के साथ तालमेल बिठाना और टीएमसी व एनसीपी जैसे दलों के साथ नए सिरे से रीअलाइनमेंट की संभावनाएं तलाशना होगा।

. युवाओं पर फोकस, नई भारत यात्रा की तैयारी*

राहुल गांधी का मानना है कि 18 से 35 वर्ष का युवा वोटर 2029 में निर्णायक होगा। ठएएळ परीक्षा विवाद पर उनकी आक्रामकता इसी रणनीति से जुड़ी है। युवा वर्ग को जोड़ने के लिए राहुल गांधी जल्द एक और देशव्यापी यात्रा शुरू कर सकते हैं। यह भारत जोड़ो यात्रा का नया संस्करण होगा।

क्या है 6 राज्यों का गणित

रणनीति के तहत 2029 से पहले 6 महत्वपूर्ण राज्यों के विधानसभा चुनाव जीतने का टार्गेट है। इससे संगठन का मनोबल बढ़ेगा और आर्थिक संसाधन भी मजबूत होंगे। कर्नाटक और हिमाचल की जीत के बाद पार्टी का फोकस अब मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और हरियाणा जैसे राज्यों पर है।

कितनी आसान है राह

कांग्रेस की यह रणनीति संगठन को चुस्त बनाने और वैचारिक स्पष्टता लाने की कोशिश दिखती है। हालांकि चुनौतियां भी कम नहीं हैं। 'सॉफ्ट हिंदुत्व' से किनारा करने पर एक वर्ग नाराज हो सकता है। प्रियंका गांधी के सामने ममता बनर्जी और शरद पवार जैसे नेताओं को साधने की मुश्किल चुनौती होगी। युवाओं को जोड़ने के लिए यात्रा से आगे ठोस एजेंडा भी जरूरी होगा। 2024 में सीटें बढ़ने के बाद कांग्रेस आक्रामक दिख रही है, लेकिन 6 राज्यों का टार्गेट हासिल करना संगठन की जमीनी मजबूती पर निर्भर करेगा।

पुलिस कमिश्नर प्रणाली पर विधानसभा में भ्रामक जानकारी देने का आरोप

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

पुलिस कमिश्नर प्रणाली को लेकर विधानसभा में दी गई जानकारी पर अब सवाल उठने लगे हैं। खुज्जी विधायक भोला राम साहू ने उपमुख्यमंत्री और गृहमंत्री विजय शर्मा को पत्र लिखकर सीधा आरोप लगाया है कि सदन में विरोधाभासी और भ्रामक जवाब दिया गया। विधायक ने पूरे मामले की जांच कराने और दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग की है।

आरोप

खुज्जी विधायक भोला राम साहू ने उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा को घेरा, कहा : गलत जवाब से सदन गुमराह

विधानसभा में क्या कहा था सरकार ने विधायक भोला राम साहू के विधानसभा प्रश्न क्रमांक 328, दिनांक 26 फरवरी 2026 के जवाब में गृहमंत्री विजय शर्मा ने कहा था कि उरला थाना क्षेत्र को दो भागों में बांटा गया है। नगर निगम बीरगांव क्षेत्र पुलिस कमिश्नर रायपुर के अधीन है और शेष क्षेत्र रायपुर ग्रामीण एसपी के अधीन है। साथ ही यह भी बताया गया था कि कुछ ग्राम पंचायतों को कमिश्नर प्रणाली में शामिल किया गया है।

जमीनी हकीकत अलग: विधायक का दावा

विधायक भोला राम साहू ने उपमुख्यमंत्री को लिखे पत्र में कहा कि विधानसभा में दी गई जानकारी और जमीनी सच्चाई में भारी विरोधाभास है। उन्होंने दो बड़े बिंदु उठाए। पहला, उरला थाने के किसी भी भाग का पयर्वेक्षण ग्रामीण एसपी द्वारा नहीं किया जा रहा है जबकि जवाब में विभाजन की बात कही गई। दूसरा, सरकार ने केवल कुछ ग्राम पंचायतों के शामिल होने की बात कही जबकि हकीकत में मुजगहन थाने के अलावा आमानाका थाने में भी कई ग्राम पंचायतें पुलिस कमिश्नर के क्षेत्राधिकार में हैं।

विधायक ने उठाए गंभीर सवाल

पत्र में विधायक भोला राम साहू ने कहा कि उन्हें अलग विश्वसनीय स्रोतों से मिली जानकारी सरकार के जवाब से मेल नहीं खाती। इससे संदेह पैदा होता है कि विधानसभा को तथ्यात्मक रूप से गलत या अधूरी जानकारी दी गई है। विधायक ने इसे गंभीर विषय बताया है।

जांच और कार्रवाई की मांग

खुज्जी विधायक ने मांग की है कि विधानसभा में प्रस्तुत उत्तर की वास्तविकता और सत्यता की जांच कराई जाए। यदि सदन में गलत, अधूरी या भ्रामक जानकारी दी गई हो तो संबंधित अधिकारियों और विभाग के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई हो। साथ ही जांच के बाद वास्तविक और प्रमाणित जानकारी उपलब्ध कराई जाए। विधायक के इस पत्र के बाद गृह विभाग में हलचल तेज हो गई है। अब देखना होगा कि सरकार इस आरोप पर क्या रुख अपनाती है।

बीएसपी की नोटिस और निजीकरण की कोशिश बर्दाश्त नहीं, यह भिलाई के अस्तित्व की लड़ाई

भिलाई की बसाहट बचाने सेक्टर-2 से जनसंपर्क अभियान शुरू, विधायक देवेंद्र यादव घर-घर पहुंचे

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

भिलाई टाउनशिप की बसाहट और शहर की पहचान को सुरक्षित रखने के लिए भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव ने सोमवार को "भिलाई की बसाहट बचाओ" जनसंपर्क अभियान की शुरुआत सेक्टर–2 से की। अभियान के पहले दिन विधायक ने पाषर्दों और जनप्रतिनिधियों के साथ घर–घर जाकर लोगों से मुलाकात की और टाउनशिप बचाने की मुहिम में समर्थन मांगा।

बीएसपी प्रबंधन पर लगाए आरोप

विधायक देवेंद्र यादव ने कहा कि बीएसपी प्रबंधन द्वारा टाउनशिप में रहने वाले लोगों को नोटिस भेजे जा रहे हैं। साथ ही सेक्टर–9 अस्पताल सहित बीएसपी क्षेत्र की बसाहट को कमजोर कर निजी हाथों में सौंपने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने कहा कि भिलाई की पहचान, यहां की सामाजिक संस्कृति और वर्षों से बसे परिवारों के भविष्य पर किसी भी प्रकार का संकट स्वीकार नहीं किया जाएगा। देवेंद्र यादव ने कहा कि यह

किसी राजनीतिक दल की लड़ाई नहीं बल्कि पूरे भिलाई के अस्तित्व और सम्मान की लड़ाई है। इसलिए सभी नागरिकों को धर्म, जाति और राजनीतिक विचारधारा से ऊपर उठकर एकजुट होना होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि यदि पूरा शहर साथ खड़ा होगा तो भिलाई की बसाहट को कोई भी नहीं उजाड़ पाएगा। अभियान के तहत सेक्टर–2 के वार्ड–56, सड़क–15 तथा वार्ड–55, सड़क–12 में बैठकें आयोजित की गईं। विधायक ने स्थानीय नागरिकों से संवाद कर उनकी चिंताओं को सुना और भरोसा दिलाया कि उनके अधिकारों और भिलाई की बसाहट की रक्षा के लिए हर स्तर पर संघर्ष किया जाएगा।

जनप्रतिनिधि–नागरिक रहे मौजूद

जनसंपर्क अभियान में पार्षद साधना सिंह, विधायक प्रतिनिधि राजेंद्र परघनिया, रमाकांत देशलहरे, सेक्टर–4 के राजेश चौधरी, सेक्टर–3 के पार्षद सुरेश वर्मा, हरिश सिंह सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि और स्थानीय नागरिक शामिल हुए।

हर सेक्टर तक पहुंचेगा अभियान

विधायक देवेंद्र यादव ने कहा कि यह अभियान आगे भी टाउनशिप के प्रत्येक सेक्टर और हर घर तक पहुंचेगा। वे स्वयं लोगों से लगातार संवाद करेंगे और सभी के सहयोग से भिलाई की बसाहट, सेक्टर–9 अस्पताल तथा शहर की विरासत को बचाने की लड़ाई मजबूती से लड़ेंगे।

बीएसपी में नेहरू पुरस्कार वितरण समारोह का दूसरा चरण संपन्न, 540 अधिकारी-कर्मचारी सम्मानित

ईडी प्रभारी अजय चक्रवर्ती बोले : टीम भावना ही बड़ी उपलब्धि की कुंजी, नया सीखते रहें

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र की ऐतिहासिक नेहरू अवार्ड योजना के तहत वर्ष 2025 के पुरस्कार वितरण समारोह का दूसरा और अंतिम चरण रविवार को संपन्न हुआ। दो दिवसीय समारोह के दूसरे दिन संयंत्र के विभिन्न विभागों के 34 समूहों के 266 अधिकारियों और कमर्चारियों को जवाहर लाल नेहरू समूह पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पहले चरण में 274 अधिकारियों और कमर्चारियों को सम्मान मिला था। इस तरह दोनों चरणों में कुल 540 पुरस्कार विजेताओं को उनके उत्कृष्ट सामूहिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

समूह पुरस्कार टीम संस्कृति का प्रतीक

समारोह के मुख्य अतिथि कायर्कारी निदेशक प्रभारी और कायर्पालक निदेशक सामग्री प्रबंधन अजय कुमार चक्रवर्ती रहे। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि समूह पुरस्कार संगठन में सामूहिक कायर्संस्कृति, परस्पर विश्वास और टीम भावना का प्रतीक हैं। किसी भी बड़ी उपलब्धि के पीछे टीम के हर सदस्य का योगदान महत्वपूर्ण होता है। इसी भावना को प्रोत्साहित करने के लिए समूह पुरस्कार दिए जाते हैं। उन्होंने सम्मानित समूहों से भविष्य में भी उत्कृष्ट कार्य कर अन्य कमर्चारियों के लिए प्रेरणा बनने का आह्वान किया। साथ ही कहा कि हमेशा कुछ नया सीखते रहिए, यही आदत जीवन में सफलता दिलाएगी।

वरिष्ठ अधिकारी रहे मौजूद

विशिष्ट अतिथि के रूप में कायर्पालक निदेशक वित्त एवं लेखा प्रवीण निगम, कायर्पालक निदेशक मानव संसाधन पवन कुमार, कायर्पालक निदेशक परियोजनाएं प्रबीर कुमार सरकार, मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ. विनीता द्विवेदी और कायर्कारी कायर्पालक निदेशक संकार्य तुषार कांत उपस्थित रहे। समारोह में वरिष्ठ अधिकारी, ऑफिसर्स एसोसिएशन के पदाधिकारी, श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधि, पुरस्कार विजेता और उनके परिजन बड़ी संख्या में शामिल हुए।

योजना का उद्देश्य

कार्यक्रम के प्रारंभ में महाप्रबंधक प्रभारी मानव संसाधन जे. एन. ठाकुर ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने नेहरू पुरस्कार योजना की विशेषताओं और दूसरे चरण के पुरस्कारों की जानकारी दी। उन्होंने सभी सम्मानित समूहों को शुभकामनाएं दीं और उत्कृष्ट कार्य संस्कृति व टीम भावना को मजबूत करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ प्रबंधक मानव संसाधन प्रियंका मीणा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्रबंधक अंजना विनोद ने दिया। प्रशस्ति पत्र के लिए नामों का वाचन उप प्रबंधक समायला अंसारी और सहायक प्रबंधक मिहिर मनोहर ने किया। उल्लेखनीय है कि भिलाई इस्पात संयंत्र की नेहरू अवार्ड योजना संगठन की सबसे पुरानी और प्रतिष्ठित योजनाओं में से एक है। इसके माध्यम से उत्कृष्ट व्यक्तिगत और सामूहिक योगदान को सम्मानित कर कार्य संस्कृति, नवाचार और टीम भावना को प्रोत्साहित किया जाता है।

खास खबर

10 घंटे में सुलझी तीन चोरी, दुर्ग पुलिस ने पांच आरोपियों को दबोचा

दुर्ग। थाना उतई पुलिस ने क्षेत्र में हुई तीन अलग अलग चोरी की वारदातों का मात्र 10 घंटे के भीतर खुलासा कर दिया। पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से चोरी गए तीनों मोटर पंप और केबल वायर समेत कुल 37 हजार रुपये का मशरूका बरामद किया है।

26 और 27 जून को हुई थीं चोरियां : थाना उतई क्षेत्र में 26 और 27 जून के बीच अज्ञात आरोपियों ने अलग स्थानों से मोटर पंप और केबल वायर चोरी कर लिए थे। इस मामले में थाना उतई में अपराध क्रमांक 334/2026, 335/2026 और 336/2026 धारा 303(2) भारतीय न्याय संहिता के तहत केस दर्ज किया गया था।

तकनीकी साक्ष्य और मुखबिर से मिली मदद: प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए पुलिस टीम ने घटनास्थलों का निरीक्षण किया। तकनीकी साक्ष्य जुटाए और मुखबिर से मिली सूचना पर संदेहियों से पूछताछ की। साक्ष्यों के आधार पर 10 घंटे के भीतर पांचों आरोपियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस के मुताबिक आरोपियों ने आर्थिक लाभ के लिए सुनसान जगहों पर लगे मोटर पंप और केबल वायर चोरी किए थे। शिवपारा वार्ड क्रमांक 18, ग्राम पुरई में प्रार्थी के घर के पीछे, मदन ईंट भट्ठी के पीछे प्रार्थी का खेत, ग्राम पुरई, उतई मेन रोड पर प्रार्थी का पोल्ट्री फार्म, ग्राम पुरई, गिरफ्तार चेतन लाल ओझा, उम्र 26 वर्ष, वार्ड 17 शिवपारा, ग्राम पुरई , शंकर साहू, उम्र 24 वर्ष, वार्ड 17 शिवपारा, ग्राम पुरई, सन्नी राजपूत, उम्र 21 वर्ष, वार्ड 17 शिवपारा, ग्राम पुरई ,कृष राजपूत, उम्र 19 वर्ष, वार्ड 17 शिवपारा, ग्राम पुरई , दुष्यंत साहू, उम्र 24 वर्ष, वार्ड 17 शिवपारा, ग्राम पुरई दुर्ग पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि अपने घर, खेत और कृषि उपकरणों की सुरक्षा के लिए जरूरी उपाय करें। किसी भी संदिग्ध व्यक्ति या गतिविधि की सूचना तुरंत नजदीकी थाना या डायल 112 पर दें।

सरकार पर दीपक बैज का हमला: जूता खरीदी में भ्रष्टाचार के लिए बदली नीति

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने साय सरकार पर तेंदूपत्ता संग्राहकों के जूता खरीदी में भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है। पत्रकारों से

चर्चा में उन्होंने कहा कि रमन सरकार के समय चरण पादुका घोटाला हुआ था। इसी कारण कांग्रेस सरकार ने जूते की जगह सीधे राशि संग्राहकों के खाते में डालना शुरू किया था। साय सरकार ने फिर से भ्रष्टाचार करने के लिए नकदी की जगह जूता देना शुरू कर दिया है।

सेफ्टी शू के नाम पर खेलः बैज

दीपक बैज ने कहा कि इस बार संग्राहकों को जो जूता दिया जा रहा है, उसमें सेफ्टी शू देने का टेंडर निकाला गया है। यह मध्यप्रदेश के एक वरिष्ठ नेता के रिश्तेदार को फायदा पहुंचाने के लिए सेफ्टी शू का क्लास डाला गया है। उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा साफ है कि जूता खरीदी के नाम पर फिर से घोटाला किया जाए।

नकटी में मकान तोड़ने का विरोध

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने नकटी में गरीबों के घर उजाड़े जाने का भी विरोध किया। उन्होंने कहा कि 40 साल से लोग घर बनाकर रह रहे हैं। सरकार दूसरी जगह विधायकों की कॉलोनी बना सकती है। नया रायपुर में एक रुपये फीट में सैकड़ों एकड़ जमीन एलॉट की जा सकती है। वहां विधायक कॉलोनी बना लेते। सरकार गरीब विरोधी है और यह अत्याचार है। बैज ने मांग की कि जिनके मकान तोड़े गए हैं, उन्हें तत्काल व्यवस्थापित किया जाए। सरकार उन्हें मकान बनाकर दे। कांग्रेस इस मुद्दे को लेकर सड़क से सदन तक लड़ाई लड़ेगी। कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने जारी की।

नगरीय निकायों को 104.54 करोड़ की निधि जारी, उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने दिए सदुपयोग के निर्देश

महापौर, अध्यक्ष और पार्षद निधि से होंगे विकास कार्य

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राज्य शासन के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने प्रदेश के नगरीय निकायों के लिए महापौर निधि, अध्यक्ष निधि और पार्षद निधि के रूप में कुल 104 करोड़ 54 लाख 25 हजार रुपये जारी किए हैं। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव के अनुमोदन के बाद यह राशि जारी की गई है। उप मुख्यमंत्री अरुण साव के निर्देश पर चालू वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए महापौर निधि और अध्यक्ष निधि की 50 प्रतिशत राशि प्रथम किस्त के रूप में दी गई है। तीनों तरह के निकायों में पार्षद निधि भी जारी की गई है। इस राशि से निकायों में मूलभूत विकास के कार्य किए जाएंगे। श्री साव ने नगरीय निकायों को निधि का सदुपयोग कर शहरी आबादी तक योजनाओं का समुचित लाभ पहुंचाने के निर्देश दिए हैं।

निधि का विवरण कुल जारी राशिः 104 करोड़ 54 लाख 25 हजार रुपये
महापौर एवं अध्यक्ष निधिः कुल 31 करोड़ 16 लाख 25 हजार रुपये
14 नगर निगमों में महापौर निधिः 10 करोड़ 12 लाख 50 हजार रुपये
57 नगर पालिकाओं में अध्यक्ष निधिः 11 करोड़ 6 लाख 25 हजार रुपये
121 नगर पंचायतों में अध्यक्ष निधिः 9 करोड़ 97 लाख 50 हजार रुपये
पार्षद निधिः कुल 73 करोड़ 38 लाख रुपये
नगर निगमों कोः 21 करोड़ 84 लाख रुपये
नगर पालिकाओं कोः 24 करोड़ 34 लाख 50 हजार रुपये
नगर पंचायतों कोः 27 करोड़ 19 लाख 50 हजार रुपये पार्षद निधि की यह राशि प्रथम किस्त के रूप में 50 प्रतिशत दी गई है।

संकुल स्रोत केंद्र हथखोज में शाला प्रवेशोत्सव मनी

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

संकुल स्रोत केंद्र हथखोज, विकासखंड एवं जिला दुर्ग में सोमवार को संकुल स्तरीय शाला प्रवेश उत्सव उत्साह के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम में नवप्रवेशी विद्यार्थियों का तिलक लगाकर, मिठाई खिलाकर तथा पाठ्यपुस्तकों और गणवेश का वितरण कर आत्मीय स्वागत किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के पूजन और वंदना के साथ हुआ। इसके बाद संकुल प्राचार्य

मनोज मढ़रिया ने विद्यार्थियों और अभिभावकों को संबोधित किया। उन्होंने नियमित अध्ययन, अनुशासन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। सभी विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।इस अवसर पर संकुल समन्वयक रुस्तम सिंह, पुरुषोत्तम वर्मा, अक्लोरडीह शाला के प्रधान पाठक बेंदलाला लिल्हारे, धमर्राज सहारे, प्राथमिक शाला हथखोज की प्रधान पाठिका जयश्री भिते, रेखा देवी ठाकुर सहित संकुल के अन्य शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित रहे। सभी ने नवप्रवेशी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का सफल संचालन संकुल परिवार के सहयोग से संपन्न हुआ। अंत में सभी अतिथियों और उपस्थितजनों का आभार व्यक्त किया गया।

सहायक शिक्षकों के लिए समयमान वेतनमान का विकल्प तकर्संगत नहीं : शिक्षक फेडरेशन

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ प्रदेश शिक्षक फेडरेशन ने सामान्य प्रशासन विभाग के उस आदेश को औचित्यहीन बताया है जिसमें क्रमोन्नति योजना को समयमान वेतनमान में समाहित करने के लिए विकल्प मांगा गया है। फेडरेशन के प्रांताध्यक्ष राजेश चटर्जी ने कहा कि सहायक शिक्षक संवर्ग को त्रिस्तरीय समयमान वेतनमान की स्वीकृति ही नहीं है तो विकल्प कैसे भरा जाए।

सवाल

बिना स्वीकृति आदेश के विकल्प कैसे भरें, अंतिम तिथि बढ़ाई जाए

9 जून के आदेश पर आपत्ति

राजेश चटर्जी ने बताया कि सामान्य प्रशासन विभाग ने 9 जून 2026 को आदेश जारी कर प्रचलित क्रमोन्नति योजनाओं को वित्त विभाग के समयमान वेतनमान में समाहित करने के लिए कहा है। यह आदेश युक्तिसंगत नहीं है। उन्होंने कहा कि सामान्य प्रशासन विभाग के 24 अप्रैल 2006 के आदेश से सहायक शिक्षक वेतनमान 4000-6000 ग्रेड पे 2400 को 12 और 24 वर्ष में क्रमशः 5000-8000 ग्रेड पे 4200 और 5500-9000 ग्रेड पे 4300 स्वीकृत हुआ था। बाद में 10 मार्च 2017 के आदेश से 10 वर्ष और 20 वर्ष में प्रथम और द्वितीय क्रमोन्नति स्वीकृत हुई।

समयमान योजना में विसंगति

फेडरेशन का कहना है कि वित्त विभाग के 28 अप्रैल 2008 के आदेश से समयमान वेतन योजना लागू की गई थी। इसमें प्रारंभिक वेतनमान 4000-6000 का प्रथम उच्चतर वेतनमान 4500-7000 और द्वितीय उच्चतर वेतनमान 5000-8000 है। राजेश चटर्जी ने सवाल उठाया कि यदि सहायक शिक्षक क्रमोन्नति का विकल्प लेता है तो उसे अन्य शासकीय सेवक की तरह तृतीय उच्चातार वेतनमान का लाभ नहीं मिलेगा। यदि समयमान का विकल्प लेता है तो स्वीकृत नहीं होगा क्योंकि सहायक शिक्षक को त्रिस्तरीय समयमान वेतनमान का लाभ स्वीकृत ही नहीं हुआ है।

उच्च वर्ग को लाभ, सहायक शिक्षक वंचित

उन्होंने बताया कि उच्च वर्ग शिक्षक, व्याख्याता और प्राचार्य को समयमान वेतनमान का लाभ पहले से स्वीकृत है। समयमान वेतनमान में सेवाकाल की गणना सेवा में प्रवेश की तिथि से होती है। ऐसे में सहायक शिक्षक संवर्ग के लिए समयमान वेतनमान का विकल्प लेना संभव ही नहीं है।

मुख्यमंत्री से मांग

छत्तीसगढ़ प्रदेश शिक्षक फेडरेशन ने मांग की है कि सहायक शिक्षक संवर्ग को त्रिस्तरीय समयमान वेतनमान स्वीकृत होने के बाद ही विकल्प लेने की अंतिम तिथि में वृद्धि की जाए। इस संबंध में मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री, मुख्य सचिव, सचिव सामान्य प्रशासन विभाग और सचिव स्कूल शिक्षा को पत्र लिखा गया है।

बिजली व्यवस्था सुधारने विभाग को दी सख्त हिदायत, वोरा और वर्मा ने की शिकायत

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

प्रदेश में लगातार बढ़ती बिजली दरों, अव्यवस्थित बिजली आपूर्ति और उपभोक्ताओं की गंभीर समस्याओं को लेकर वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं पूर्व विधायक अरुण वोरा ने बिजली विभाग के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। पूर्व महापौर आर.एन. वर्मा के साथ उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत मंडल के कायर्पालन निदेशक संजय खंडेलवाल से मुलाकात कर जनता की परेशानियों को प्रमुखता से उठाया और व्यवस्था में तत्काल सुधार की मांग की। अरुण वोरा ने कहा कि महंगाई के दौर में आम जनता पहले ही आर्थिक दबाव झेल रही है, ऐसे में बढ़े हुए बिजली बिलों ने परिवारों की परेशानी और बढ़ा दी है। उपभोक्ता नियमित रूप से बिलों का भुगतान कर रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद उन्हें निर्बाध बिजली आपूर्ति

और बेहतर सेवाएं नहीं मिल पा रही हैं।उन्होंने अधिकारियों के सामने बिजली विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि शहरों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक लगातार शिकायतें सामने आ रही हैं। बिना वास्तविक खपत के अधिक बिल, बार-बार बिजली कटौती, लो-वोल्टेज, खराब मीटर और शिकायतों के निराकरण में देरी से जनता परेशान है। वोरा ने स्ट्रीट लाइट व्यवस्था को लेकर भी नाराजगी जताते हुए कहा कि प्रदेश के कई शहरों, कस्बों और प्रमुख मार्गों पर अंधेरा पसरा हुआ है। लंबे समय से बंद पड़ी स्ट्रीट लाइटें आम नागरिकों की सुरक्षा के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। उन्होंने कहा, ह्लजब राष्ट्रीय राजमार्ग जैसे महत्वपूर्ण मार्गों पर भी स्ट्रीट लाइटों की स्थिति खराब है और करोड़ों रुपये खर्च होने के बाद भी व्यवस्था नहीं सुधर रही है, तो आम जनता की सुरक्षा की जिम्मेदारी कौन लेगा? यह जनता की सुविधाओं के साथ गंभीर लापरवाही है। अरुण वोरा ने स्पष्ट कहा कि बिजली जनता की मूलभूत आवश्यकता है और इसमें लापरवाही किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं की जाएगी। आम नागरिक अपनी मेहनत की कमाई से बिजली बिल भरता है, इसलिए उसे पारदर्शी, सुचारु और जवाबदेह बिजली व्यवस्था मिलना उसका अधिकार है।उन्होंने प्रशासन और बिजली विभाग को सख्त संदेश देते हुए कहा कि यदि जल्द ही बिजली संबंधी समस्याओं का निराकरण नहीं किया गया और व्यवस्था में सुधार नहीं हुआ, तो कांग्रेस जनता के साथ सड़क पर उतरकर जन आंदोलन करने के लिए बाध्य होगी।

जनता की आवाज को मजबूती से उठाया जाएगा और उपभोक्ताओं के अधिकारों के लिए संघर्ष जारी रहेगा।पूर्व महापौर आर.एन. वर्मा ने कहा कि कांग्रेस हमेशा जनता के मुद्दों को लेकर संघर्ष करती रही है और बिजली उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए आगे भी आवाज उठाती रहेगी। उन्होंने विभाग से सभी शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करने की मांग की।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय दुर्ग की प्राचार्य प्रभा मिंज सहायक आयुक्त बनीं, मुंबई संभाग में मिली जिम्मेदारी

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, दुर्ग की प्राचार्य प्रभा मिंज सहायक आयुक्त पद पर पदोन्नत हुई हैं। उन्हें मुंबई संभाग की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। उनके सम्मान में मंगलवार को विद्यालय परिसर में गरिमामय विदाई समारोह का आयोजन किया गया।

शाल और स्मृति चिह्न देकर किया सम्मान

समारोह में केंद्रीय विद्यालय प्रगतिशील शिक्षक संघ, रायपुर संभाग के अध्यक्ष शैलेंद्र कुमार गिरी और महासचिव डॉ. अजय आर्य ने प्रभा मिंज को शाल, श्रीफल और स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया। दोनों पदाधिकारियों ने विश्वास जताया कि वे अपने अनुभव और नेतृत्व क्षमता से मुंबई संभाग में भी संगठन को नई ऊंचाइयों तक ले जाएंगी।

'वज्र जैसी दृढ़ता और पुष्प जैसी कोमलता जरूरी': डॉ. आर्य अपने उद्बोधन में डॉ. अजय आर्य ने कहा कि महाकवि भवभूति के अनुसार भगवान श्रीराम के व्यक्तित्व में वज्र जैसी कठोरता और पुष्प जैसी कोमलता का समन्वय था। यही संतुलन एक आदर्श शिक्षक और कुशल प्रशासक की पहचान है। उन्होंने कहा कि प्रशासन में निर्णय क्षमता और अनुशासन

जरूरी है, वहीं विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ संवेदनशीलता भी उतनी ही अहम है।

'अनुशासन और सरलता की मिसाल': भारती

शिक्षिका भारती यदु ने कहा कि प्रभा मिंज का कार्यकाल अनुशासन, समर्पण और मानवीय मूल्यों का उदाहरण रहा है। उन्होंने विद्यालय को एक परिवार की तरह चलाया और हर शिक्षक व विद्यार्थी को आगे बढ़ने का मौका दिया।

'यह पदोन्नति सामूहिक प्रयास का परिणाम': प्रभा

अपने संबोधन में प्रभा मिंज ने कहा कि यह पदोन्नति केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं बल्कि विद्यालय परिवार के विश्वास और सहयोग का परिणाम है। पीएम श्री केंद्रीय

विद्यालय दुर्ग में बिताया समय उनके जीवन की अमूल्य धरोहर रहेगा। उन्होंने नई जिम्मेदारी में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए निष्ठा से काम करने की बात कही।

संचालन और शुभकामनाएं

कार्यक्रम का संचालन रोशनी चंद्राकर ने किया। उन्होंने कहा कि एक श्रेष्ठ व्यक्ति का प्रभाव पद से नहीं बल्कि उसके द्वारा स्पर्श किए गए जीवनों से आंका जाता है। पिंकी सिंह ने कहा कि प्रभा मिंज की कार्यनिष्ठा और सरलता सभी के लिए प्रेरणा है। समारोह में आर. पी. सेहमी, फरहाना खान, जे. के. चौधरी, दीपिका प्रधान, मनीषा के. आर., दिव्या परमार, अपर्णा, कमल साहू, शालू, लीला सिंह, मीना गुप्ता, एलिजाबेथ मैथ्यू, श्यामा वर्मा, सुषमा नायक, शिवम कुमार, सरला उईके, अंकिता, रोहित और प्रवीण सहित विद्यालय परिवार के शिक्षक और

बीसीसीआई ने एशियाई खेलों के लिए भारतीय टीम का किया ऐलान

हरमनप्रीत कौर कप्तान

जापान के आइची-नागोया में 19 सितंबर से 4 अक्टूबर तक खेले जाएंगे

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने एशियाई खेलों के लिए महिला टीम का ऐलान कर दिया है. जिसमें कुल 15 खिलाड़ियों को शामिल किया गया है। चयन समिति ने उसी टीम पर भरोसा जताया है जो महिला टी-20 विश्व कप 2026 में खेली थी. बस एक बदलाव किया गया है. यास्तिका भाटिया की जगह बाएं हाथ की बल्लेबाज और विकेटकीपर जी. कामलिनी को टीम में शामिल किया गया है।

इसके अलावा वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल में जगह नहीं बनाने के बावजूद हरमनप्रीत कौर पह बोर्ड ने एक बार फिर भरोसा जताया है और टीम के कप्तान के रूप में बरकरार रखा. उप-कप्तान स्मृति मंधाना के साथ शेफाली वर्मा और जेमिमा रोड्रिग्स बल्लेबाजी की कमान संभालेंगी। स्टार ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा मध्य क्रम को मजबूती देंगी, जबकि ऋचा घोष विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी संभालेंगी और कामलिनी बैकअप विकेटकीपर होंगी।

तेज गेंदबाजी की कमान स्विंग स्पेशलिस्ट रेणुका सिंह ठाकुर और अनुभवी अरुंधति रेड्डी संभालेंगी। वहीं, स्पिन विभाग में बाएं हाथ की ऑर्थोडॉक्स गेंदबाज राधा यादव और ऑफ-स्पिनर श्रेयंका पाटिल अपनी विशेषज्ञता दिखाएंगी. हालांकि, बीसीसीआई ने कहा है कि श्रेयंका का अंतिम टीम में शामिल होना उनकी फिटनेस क्लीयरेंस पर निर्भर करेगा, क्योंकि हाल ही में उन्हें चोट लगी थी. टखने में चोट के कारण यह ऑलराउंडर टी20 विश्व कप से बाहर हो गई थीं।

बता दें कि इस साल एशियाई खेल जापान के आइची-नागोया में 19 सितंबर से 4 अक्टूबर तक खेले जाएंगे. भारतीय महिला टीम एशियाई खेलों में मौजूदा चैंपियन के रूप में प्रवेश करेगी. उसने 2023 में चीन के हांगझोऊ एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता था।

एशियाई खेलों के लिए भारतीय महिला टीम

- हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उप-कप्तान), शेफाली वर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, दीप्ति शर्मा, ऋचा घोष (विकेटकीपर), जी कमलिनी (विकेटकीपर), भारती फुलमाली, श्री चरणी, रेणुका ठाकुर, क्रांति गौड़, अरुंधति रेड्डी, श्रेयंका पाटिल, राधा यादव, नंदनी शर्मा।

एशियाई खेलों के लिए भारतीय टीम

श्रेयस अय्यर (कप्तान), वैभव सूर्यवंशी, अभिषेक शर्मा, संजू सैमसन, ईशान किशन, शिवम दुबे, तिलक वर्मा, नितीश रेड्डी, अक्षर पटेल, वाशिंगटन सुंदर, वरुण चक्रवर्ती, रवि बिश्नोई, हर्षित राणा, अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह।

विश्व कप से बाहर होने के बाद जर्मनी में गहरी निराशा

कोच बोले-'बिल्ड-अप प्ले बहुत धीमा था'

फॉक्सबोरो। जर्मनी के मुख्य कोच जूलियन नागेल्समैन ने फीफा विश्व कप 2026 से टीम के बाहर होने के बाद कहा कि 'धीमी बिल्ड-अप प्ले' ने चार बार की विश्व चैंपियन टीम से राउंड ऑफ 16 में पहुंचने का मौका छीन लिया है। बोस्टन स्टेडियम में मंगलवार को खेले गए राउंड ऑफ 32 मुकाबले में जर्मनी का अभियान नाटकीय अंदाज में समाप्त हो गया। नियमित समय तक मुकाबला 1-1 की बराबरी पर रहा, जिसके बाद पेनल्टी शूटआउट

में पराग्वे ने जर्मनी को 4-3 से हराकर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया। फीफा विश्व कप के इतिहास में जर्मनी इससे पहले कभी भी पेनल्टी शूटआउट में नहीं हारा था। लगभग मुकाबले से बाहर हो चुकी जर्मन टीम को मैनुअल नोयर ने बराबरी दिलाकर वापस मुकाबले में ला दिया, लेकिन आखिरकार पराग्वे ने अपनी तीसरी सफल स्पॉट-किक के दम पर अंतिम 16 में जगह पक्की कर ली।

नागेल्समैन ने कहा, 'ड्रेसिंग रूम में गहरी निराशा का माहौल है। दुर्भाग्य से फुटबॉल कभी-कभी ऐसा ही होता है। कुछ टीमें बेहद साधारण तरीकों से भी जीत हासिल कर लेती हैं और आपको उन तरीकों का लगातार बचाव करना पड़ता है। हमने अपने प्रतिद्वंद्वी को दौड़ाने और उस पर दबाव बनाने में बहुत ज्यादा समय लगा दिया। हम गेंद को बॉक्स में कहीं अधिक बार डाल सकते थे। हमें मैच का फैसला पेनल्टी शूटआउट तक जाने से पहले ही कर देना चाहिए था।

फीफा वर्ल्ड कप 2026 से जर्मनी बाहर

पेनल्टी शूटआउट में पैराग्वे ने किया बड़ा उलटफेर, जर्मनी को हराकर प्री-क्वार्टरफाइनल में बनाई जगह

- मार्टिनेली के गोल से ब्राजील अंतिम-16 में पहुंचा

नईदिल्ली (एजेंसी)। फुटबॉल वर्ल्ड कप में मंगलवार को बड़ा उलटफेर हुआ। पैराग्वे ने चार बार की वर्ल्ड चैंपियन जर्मनी को पेनल्टी शूटआउट में 4-3 से हराकर बाहर कर दिया। जर्मनी टूर्नामेंट के इतिहास में पहली बार पेनल्टी में हारी है।इससे पहले 5 बार की चैंपियन ब्राजील ने रोमांचक मुकाबले में जापान को 2-1 से हराकर प्री-क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली। यह जीत 1958 में स्वीडन में जीते उसके पहले वर्ल्ड कप की सालगिरह के दिन आई। टीम 20वीं बार राउंड ऑफ-16 में पहुंची है। एक अन्य मुकाबले में मोरक्को ने नीदरलैंड को पेनल्टी शूटआउट में 3-2 से हराया। ब्राजील अब राउंड ऑफ-16 में आइवरी कोस्ट या नॉर्वे से भिड़ेगा, जबकि पैराग्वे का मुकाबला फ्रांस और स्वीडन के विजेता से होगा। मोरक्को का मैच 4 जुलाई को कनाडा से होगा।

मोरक्को के गोलकीपर ने 2 सेव किए; ब्राजील के मार्टिनेली ने आखिरी मिनट में गोल - फॉक्सबोरो में फीफा रैंकिंग में 34वें नंबर की टीम पैराग्वे ने राउंड ऑफ 32 में 12वें नंबर की जर्मनी को कड़ी टक्कर दी। निर्धारित समय और इंजरी टाइम के बाद स्कोर 1-1 की बराबरी पर रहा। शूटआउट में जोस कैनाले ने पहला सडन डेथ पेनल्टी गोल किया, जबकि गोलकीपर ऑरलैंडो गिल ने दो अहम बचाव कर टीम को जीत दिलाई। इधर, ह्यूस्टन में ब्राजील की जीत आखिरी क्षणों में आई। दूसरे हाफ में सब्स्टिट्यूट के तौर पर उतरे गैब्रियल मार्टिनेली ने इंजरी टाइम के छठे मिनट में गोल कर मुकाबला खत्म होने से ठीक पहले टीम को जीत दिला दी। ब्राजील 20वीं बार राउंड ऑफ 16 में पहुंची है।

इंजरी टाइम में जोनाथन ताह का गोल अमान्य हुआ - पैराग्वे ने 42वें मिनट में बढ़त बनाई। मिगेल अल्मिरोन के पास पर मातियास गालार्सा ने क्रॉस किया, जिस पर जूलियो एनसिसो ने हेडर से गोल कर टीम को 1-0 की बढ़त दिलाई। जर्मनी ने 52वें मिनट में वापसी की। फ्लोरियन विर्ट्ज के क्रॉस पर काई हैवर्ट्ज ने हेडर से बराबरी का गोल किया। अतिरिक्त समय के 102वें मिनट में जोनाथन ताह ने कॉर्नर पर गोल किया, लेकिन वीडियो रिव्यू में वाल्डेमार एंटोन द्वारा गोलकीपर ऑरलैंडो गिल को धक्का देने की पुष्टि होने पर गोल रद्द कर दिया गया। जर्मनी ने पहले हाफ में 78% गेंद पर कब्जा रखा, लेकिन पैराग्वे की 4-5-1 रक्षात्मक रणनीति नहीं तोड़ सका। ग्रुप स्टेज में 10 गोल करने के बावजूद जर्मन टीम नॉकआउट में संघर्ष करती दिखी।जर्मनी के दिग्गज गोलकीपर मैनुअल नेयुर ने हार के बाद संन्यास ले लिया। वे 2014 की वर्ल्ड चैंपियन जर्मन टीम का हिस्सा रहे। उन्होंने 124 मैच खेले हैं। उन्होंने 2017 फीफा कन्फेडरेशंस कप भी अपने नाम किया था। हार से निराश गोलकीपर मैनुअल नेयुर ने इंटरनेशनल फुटबॉल को अलविदा कह दिया।

गोलकीपर गिल बोले- हर प्लेयर का विश्लेषण किया - मैच के बाद ऑरलैंडो गिल ने कहा, 'हमने हर खिलाड़ी और हर छोटी बात का विश्लेषण किया था। उसी की बदौलत मैं सिर्फ दो पेनल्टी मिस होने दे पाया। यह जीत पैराग्वे के सभी लोगों के लिए है।'

काई हैवर्ट्ज ने हार के बाद कहा, इस वर्ल्ड कप से हमारी बहुत बड़ी उम्मीदें थीं। फिर से निराश होना बहुत मुश्किल है। हम मौके बनाने और खेल की रफ्तार बनाए रखने में संघर्ष कर रहे।गोलकीपर ऑरलैंडो गिल सुपीरियर प्लेयर ऑफ द मैच चुने गए।

ब्राजील ने इंजरी टाइम में जापान से जीत छीनी - जापान ने 29वें मिनट में बढ़त बनाई। काइशू सानो ने मिडफील्ड में ब्राजील की गलत पासिंग का फायदा उठाकर दूर से दाएं पैर से शानदार गोल किया। ब्राजील ने 56वें मिनट में बराबरी की। गैब्रियल मागाल्हाइस के असिस्ट पर कैसेमीरो ने हेडर से गोल किया। इससे 2 मिनट पहले उनका हेडर जापान के गोलकीपर जियोन सुजुकी ने रोक लिया था।

58वें मिनट में विनीसियस जूनियर के पास बढ़त दिलाने का मौका था, लेकिन सुजुकी ने उनका शॉट डिफलेक्ट कर दिया और गेंद पोस्ट से टकराकर बाहर चली गई। ब्राजील के कोच कार्लो एंसेलोटी ने दूसरे हाफ में गैब्रियल मार्टिनेली को उतारा। उन्होंने इंजरी टाइम के छठे मिनट में विजयी गोल कर टीम को 2-1 से जीत दिला दी।कैसेमीरो सुपीरियर प्लेयर ऑफ द मैच चुने गए।

मैच में खास

- यह जर्मनी और पैराग्वे का वर्ल्ड कप में दूसरा मुकाबला था। 2002 में जर्मनी ने 1-0 से जीत दर्ज की थी। अब लगभग 24 साल बाद पैराग्वे ने उस हार का बदला ले लिया।
- पैराग्वे इससे पहले पांच नॉकआउट मुकाबलों में गोल नहीं कर पाया था। 2010 में उसने जापान को पेनल्टी शूटआउट में हराकर पहली बार नॉकआउट मैच जीता था।
- जर्मनी 2014 वर्ल्ड कप फाइनल के बाद पहली बार नॉकआउट मैच खेल रहा था। पिछली दो बार वह ग्रुप स्टेज से ही बाहर हो गया था।

विंबलडन के पहले दौर में वू की कड़ी चुनौती

जोकोविच ने जीता मुकाबला

लंदन। सात बार के चैंपियन नोवाक जोकोविच ने अपने 21वें विंबलडन अभियान की रोमांचक शुरुआत करते हुए मंगलवार को यहां चीन के यिबिंग वू को 6-4, 5-7, 6-4, 6-4 से हराकर जीत दर्ज की। सातवीं वरीयता प्राप्त खिलाडी ने अच्छी सर्विस की और खराब प्रदर्शन भी नहीं किया, लेकिन वह वू को सेंटर कोर्ट के माहौल का आनंद लेने से रोक नहीं सके। पहले सेट में दुनिया के 102वें रैंक वाले चीनी खिलाड़ी ने 15 विनर्स लगाए, हालांकि उतनी ही संख्या में अनफोर्स्ड गलतियां भी कीं। दूसरे सेट की शुरुआत में ही निर्णायक मोड़ आ गया। अगर जोकोविच अपने शुरुआती ब्रेक अवसरों में से एक

को भुना लेते, तो वह आसानी से नियंत्रित और अपेक्षाकृत सरल जीत की ओर बढ़ सकते थे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, और वू का आत्मविश्वास लगातार बढ़ता गया, जबकि दर्शक जोर-शोर से उनका नाम पुकारते रहे।

तीसरे सेट की शुरुआत में छत बंद होने के बाद सर्बियाई खिलाड़ी को लगातार चुनौती का सामना करना पड़ा। कंधे की चोट के कारण इस साल केवल पांच टूर्नामेंट खेलने वाले जोकोविच ने तीसरे सेट के अंत में पूरी ताकत झोंककर वू की सर्विस ब्रेक की।

जोकोविच ने संघर्ष करते हुए तीसरा सेट अपने नाम किया और फिर चौथे सेट में अहम मौकों पर पूरी तरह नियंत्रण बनाकर विंबलडन के पहले दौर में अपना रिकॉर्ड 21-0 कर लिया। उन्होंने चौथे सेट में छह ब्रेक प्वाइंट बचाए, जिनमें 2-3 के स्कोर पर 0/40 से जुड़े तीन मौके भी शामिल थे। आखिरकार उन्होंने तीन घंटे और 11 मिनट में जीत हासिल की।

विजय अमृतराज बोले- विंबलडन में अमेरिकी चुनौती

- फ्रिट्ज और शेल्टन बड़ा उलटफेर कर सकते हैं, शुरुआती मैच होंगे निर्णायक

नईदिल्ली (एजेंसी)। विंबलडन में अमेरिका के लंबे इंतजार को खत्म करने के लिए टेलर फिट्ज और बेन शेल्टन मजबूत दावेदार बनकर उभरे हैं। पूर्व भारतीय टेनिस खिलाड़ी विजय अमृतराज का मानना है कि अगर दोनों खिलाड़ी पूरी तरह फिट रहते हैं, तो ग्रास कोर्ट पर किसी भी खिलाड़ी को चुनौती दे सकते हैं। हालांकि, उनके अनुसार टूर्नामेंट शुरुआती मुकाबले ही उनके आगे के सफर की दिशा तय करेंगे। विंबलडन की शुरुआत आज से हो चुकी है।

फ्रिट्ज व शेल्टन से काफी उम्मीदें - जियोस्टार मीडिया डे पर विंबलडन 2026 से पहले बातचीत के दौरान जियोस्टार एक्सपर्ट विजय अमृतराज ने कहा, अमेरिका को लंबे समय से विंबलडन मेंस सिंगल्स में चैंपियन का इंतजार है और इस बार फ्रिट्ज व शेल्टन से काफी उम्मीदें हैं। दोनों का खेल ग्रास कोर्ट के लिए शानदार है और वे बड़े खिलाड़ियों को हराने की क्षमता रखते हैं।

उन्होंने कहा कि टेलर फिट्ज की फिटनेस सबसे अहम होगी। अगर वह पूरी तरह फिट रहे, तो टूर्नामेंट में लंबा सफर तय कर सकते हैं। साथ ही शुरुआती राउंड के मुकाबले दोनों खिलाड़ियों के लिए बेहद महत्वपूर्ण होंगे, क्योंकि शुरुआती जीत से खिलाड़ियों का आत्मविश्वास बढ़ता है।

ओलंपिक में क्रिकेट

आईओसी ने जारी किया क्वालिफिकेशन क्राइटेरिया

जानें किस टीम को मिलेग लॉस एंजेलिस में खेलने का मौका?

- महिला टीम ने ओलंपिक 2028 में जगह पक्की की
- पुरुष टीम को एशिया की टॉप-रैंक वाली टी20 टीम बननी होगी।

नईदिल्ली (एजेंसी)। ओलंपिक में क्रिकेट वापसी की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया गया. इंटरनेशनल ओलंपिक (आईओसी) ने लॉस एंजेलिस 2028 ओलंपिक (एल28) में पुरुषों और महिलाओं के टूर्नामेंट के लिए अलग-अलग क्वालिफिकेशन क्राइटेरिया जारी कर दिया है।

जिसके तहत भारतीय महिला क्रिकेट टीम ओलंपिक 2028 के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली टीमों में से एक बन गई है, जबकि पुरुष टीम को सीधे क्वालिफिकेशन पाने के लिए 2026 के आखिर तक आईसीसी टी-20 रैंकिंग में एशिया की सबसे ऊंची रैंकिंग वाली टीम बनना होगा। **महिलाओं के लिए-** इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (ओआईसी) ने सोमवार को पुष्टि की कि महिलाओं की प्रतियोगिता में पहले चार क्वालीफायर तय करने के लिए आईसीसी रैंकिंग का इस्तेमाल नहीं किया है. इसके बजाय, उन्होंने चल रहा महिला टी20 वर्ल्ड कप मुख्य क्वालिफिकेशन टूर्नामेंट है, जिसमें चारों महाद्वीपों में से सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाली योग्य टीम को ओलंपिक में जगह मिल जाएगी। भारत, ऑस्ट्रेलिया, ग्रेट ब्रिटेन (इंग्लैंड) और दक्षिण अफ्रीका ने ओलंपिक महिला टी20 प्रतियोगिता में अपनी जगह पक्की कर ली है। ये टीमें इंग्लैंड में चल रहे आईसीसी महिला टी-20 वर्ल्ड कप 2026 में क्रमशः एशिया, ओशिनिया, यूरोप और अफ्रीका से सबसे ऊंची रैंकिंग वाली योग्य टीमें बनकर उभरी हैं।

पुरुषों के लिए

पुरुषों के क्वालिफिकेशन का रास्ता अलग है। आईसीसी पुरुष टी-20 रैंकिंग के जरिए ओलंपिक में सीधे चार स्थान दिए जाएंगे, जिसमें अफ्रीका, एशिया, यूरोप और ओशिनिया से सबसे ऊंची रैंकिंग वाली टीम ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करेंगी. जो टीमें 31 दिसंबर, 2026 तक टॉप पर होंगी. इसका मतलब है कि लॉस एंजिल्स का सीधा टिकट पाने के लिए भारत को एशिया की सबसे ऊंची रैंकिंग वाली योग्य टीम बननी होगी। लॉस एंजेलिस गेम्स के मेजबान के तौर पर अमेरिका को जगह पक्की मिलेगी, बशर्ते वे क्वालिफिकेशन अवधि के दौरान किसी भी समय आईसीसी मेन्स टी-20 रैंकिंग में टॉप 15 में रहने की आईसीसी की न्यूनतम योग्यता शर्त को पूरा करें. अगर वे शर्त को पूरा नहीं कर पाते हैं, तो यह जगह अगली सबसे ऊंची रैंकिंग वाली योग्य टीम को दी जाएगी. पुरुषों की प्रतियोगिता में छठी और आखिरी जगह का फैसला भी 2027 में होने वाले आईसीसी ओलंपिक क्वालिफायर के जरिए किया जाएगा।

कोहली-रोहित के बाद श्रेयस अय्यर पर जिम्मेदारी, इंग्लैंड में टी20 सीरीज जीतने की बड़ी चुनौती

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत के अनुभवी बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा का मानना है कि इंग्लैंड के खिलाफ आगामी टी20 सीरीज में कप्तानी संभालने जा रहे श्रेयस अय्यर के सामने बड़ी चुनौती होगी। हालांकि, उन्होंने अय्यर की नेतृत्व क्षमता पर पूरा भरोसा जताते हुए कहा कि उनकी असली परीक्षा कप्तानी नहीं, बल्कि बल्लेबाजी में होगी।

कोहली-रोहित के बाद इतिहास रचने का मौका - पुजारा ने जियोस्टार से बातचीत में कहा कि इंग्लैंड की सरजमीं पर टी20 सीरीज जीतना आसान नहीं होगा। अगर श्रेयस अय्यर इस सीरीज में टीम इंडिया को जीत दिलाते हैं तो वह विराट कोहली और रोहित शर्मा के बाद इंग्लैंड में टी20 सीरीज जीतने वाले तीसरे भारतीय कप्तान बन जाएंगे। उन्होंने कहा, श्रेयस अय्यर के लिए विराट कोहली और रोहित शर्मा के बाद इंग्लैंड में टी20 सीरीज जीतने वाले तीसरे भारतीय कप्तान बनना आसान नहीं होगा। इंग्लैंड की परिस्थितियों में खेलना हमेशा चुनौतीपूर्ण रहता है। वह पहली बार भारत की टी20 टीम की कप्तानी कर रहे हैं और लगभग दो साल बाद इस फॉर्मेट में वापसी कर रहे हैं, इसलिए चुनौती बड़ी है।

कप्तानी पर नहीं, बल्लेबाजी पर होगी असली परीक्षा - हालांकि पुजारा को कप्तान के तौर पर अय्यर पर कोई संदेह नहीं है। उन्होंने आईपीएल 2026 में पंजाब किंग्स के साथ उनके प्रदर्शन की तारीफ करते हुए कहा कि इसी वजह से उन्हें भारतीय टीम की कप्तानी सौंपी गई है। पुजारा ने कहा, कप्तान के रूप में मुझे श्रेयस अय्यर पर कोई शक नहीं है। उन्होंने आईपीएल में पंजाब किंग्स के साथ शानदार काम किया है। वह आक्रामक सोच वाले कप्तान हैं, सामने से नेतृत्व करते हैं और खिलाड़ियों को खुलकर खेलने की आजादी देते हैं। कप्तानी में वह सफल रहेंगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा, लेकिन उनकी असली परीक्षा बल्लेबाजी होगी। उन्हें मिडिल ऑर्डर में खुद को साबित करना होगा और इंग्लैंड की परिस्थितियों में रन बनाकर दिखाने होंगे।

वैभव सूर्यवंशी के डेब्यू पर भी दिया बड़ा बयान - पुजारा ने 15 वर्षीय युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी को लेकर भी अपनी राय रखी। उनका मानना है कि भारतीय टीम के मजबूत टॉप ऑर्डर को देखते हुए फिलहाल उन्हें प्लेइंग इलेवन में मौका मिलना मुश्किल है। उन्होंने कहा कि वैभव बेहद प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं, लेकिन मौजूदा टीम संयोजन को देखते हुए उनके तत्काल अंतरराष्ट्रीय डेब्यू की संभावना कम नजर आती है।

न्यूज़ीलैंड-इंग्लैंड

टॉम लैथम ने रचा इतिहास, इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज जीतकर एलीट कप्तानों की लिस्ट में शामिल

लंदन (एजेंसी)। टॉम लैथम की कप्तानी में न्यूजीलैंड ने इंग्लैंड को तीसरे और अंतिम टेस्ट में 160 रन

से हराकर तीन मैचों की सीरीज 2-1 से अपने नाम कर ली। बेन स्टोक्स की टीम को 373 रन का लक्ष्य मिला था, लेकिन अंतिम दिन पूरी टीम 212 रन पर सिमट गई। वह हार नहीं टाल सके।

इस जीत के साथ न्यूजीलैंड ने इतिहास रच दिया। टीम ने पहली बार किसी टेस्ट सीरीज का पहला मैच हारने के बाद वापसी करते हुए सीरीज जीती। साथ ही 1999 के बाद इंग्लैंड में तीन या उससे अधिक मैचों की टेस्ट सीरीज जीतने का कारनामा भी किया।

टॉम लैथम एलीट कप्तानों की सूची में शामिल - इस ऐतिहासिक जीत के साथ टॉम लैथम ने कप्तानी में बड़ा मुकाम हासिल कर लिया। वह टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में ऐसे सिर्फ छठे कप्तान बने हैं, जिन्होंने भारत और इंग्लैंड दोनों देशों में जाकर टेस्ट सीरीज जीती है। इतना ही नहीं, 21वीं सदी में लैथम पहले विदेशी कप्तान हैं जिन्होंने यह दुर्लभ उपलब्धि हासिल की है। इस प्रदर्शन ने उन्हें टेस्ट क्रिकेट के सबसे सफल विदेशी कप्तानों में शामिल कर दिया है।

भारत के बाद इंग्लैंड में भी बजा जीत का डंका - इंग्लैंड में मिली यह जीत लैथम की 2024 में भारत में मिली ऐतिहासिक सफलता के बाद आई है। तब न्यूजीलैंड ने भारतीय सरजमीं पर भारत को 3-0 से क्लीन स्वीप कर इतिहास रचा था। यह पहली बार था जब किसी विदेशी टीम ने भारत को उसके घर में तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में क्लीन स्वीप किया था।

संपादकीय

सीवर टैंक की सफाई के दौरान सुरक्षा मानकों की अनदेखी से हो रही मौतें

इस घटना ने सुरक्षा मानकों की हो रही अनदेखी को एक बार फिर उजागर कर दिया है इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि वर्तमान समय में जहां छोटे-छोटे कार्य आधुनिक उपकरणों की मदद से किए जा रहे हैं, वहीं जोखिम भरे साफ-सफाई के काम आज भी परंपरागत तरीके से ही हो रहे हैं। नतीजा यह कि सेप्टिक टैंक और सीवर की सफाई के दौरान जान जाने की घटनाएं आम हो गई हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के मुंडका इलाके में बीते शुक्रवार को एक ऐसी ही घटना सामने आई, जहां एक कारखाने के सेप्टिक टैंक की सफाई करते वक्त जहरीली गैस की चपेट में आने से तीन श्रमिकों की मौत हो गई है इस घटना ने सुरक्षा मानकों की हो रही अनदेखी को एक बार फिर उजागर कर दिया है। खबरों के मुताबिक इन श्रमिकों को बिना सुरक्षा उपायों के ही सेप्टिक टैंक में उतार दिया गया था, जिससे यह हादसा हुआ। इससे साफ है कि दिल्ली सहित देश भर में न्यायालय के निर्देशों का गंभीरता से पालन नहीं हो रहा है। शीर्ष अदालत ने इस मामले में अपने विस्तृत आदेश में स्पष्ट कहा था कि सेप्टिक टैंक और सीवर की हाथ से सफाई पर पूरी तरह पाबंदी लगाई जानी चाहिए ।यह गंभीर चिंता का विषय है कि सुरक्षा मानकों का पालन करने की सख्त हिदायत के बावजूद एहतियाती उपायों के बिना ही श्रमिकों को सीवर और सेप्टिक टैंक में उतार दिया जाता है। उस समय यह जांच करने की भी जरूरत महसूस नहीं की जाती कि वहां आक्सीजन का स्तर क्या है और कहीं जहरीली गैस का प्रभाव ज्यादा तो नहीं है? ज्यादातर मामलों में श्रमिकों को बचाव के लिए सुरक्षा उपकरण नहीं दिए जाते। यही वजह है कि बार-बार ऐसी घटनाएं सामने आने पर वर्ष 2023 में शीर्ष अदालत ने केंद्र और राज्य सरकारों से पूछा था कि उसके आदेश का पालन क्यों नहीं हो रहा है ।ऐसे हादसों में जान गंवाने वाले सफाई कर्मियों के परिवारों के लिए मुआवजा राशि को लेकर भी कोई स्पष्ट नीति मौजूद नही है। जाहिर है कि कागजों में कोई नियम-कानून बना देने भर से व्यवस्था में सुधार नहीं हो पाता है, इसके लिए उन्हें धरातल पर कड़ाई से लागू करने की जरूरत होती है।

उत्तरप्रदेश एक ऐसे मुख्यमंत्री से रूबरू है, जिसे राजनीति के मैदान में बहुत गंभीरता से नहीं लिया जा रहा था। उनके बारे में यह ख्यात था कि वे एक खास वर्ग की राजनीति करते हैं और भारतीय जनता पार्टी भी उनकी राजनीतिक शैली से पूरी तरह सहमत नही है। लेकिन उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने जिस तरह अपनी पकड़ बनाई है और देश में एक अलग माडल खड़ा दिया है, वह सर्वत्र चर्चा का विषय है। इससे यह भी साबित हो रहा है कि 'अपनी राजनीति' के प्रति भाजपा का आत्मदैन्य कम हो रहा है। वहीं असम में हेमंत विश्वशर्मा उम्मीदों का चेहरा बनकर उभरे हैं, असम में तीसरी बार सरकार बनाकर भाजपा ने पूर्वोत्तर में इतिहास रच दिया है।

नई भाजपा के रोल मॉडल हैं योगी, हेमंत और शुभेंदु!

(प्रो. संजय द्विवेदी)

भाजपा का आज तक का ट्रैक हिंदुत्व का वैचारिक और राजनीतिक इस्तेमाल कर सत्ता में आने का रहा है। देश की राजनीति में चल रहे विमर्श में भाजपा बड़ी चतुराई से इस कार्ड का इस्तेमाल तो करती थी, किंतु उसके नेतृत्व में इसे लेकर एक हिचक बनी रहती थी। वो हिचक अटल जी से लेकर आडवानी तक हर दौर में दिखी है।

उत्तरप्रदेश एक ऐसे मुख्यमंत्री से रूबरू है, जिसे राजनीति के मैदान में बहुत गंभीरता से नहीं लिया जा रहा था। उनके बारे में यह ख्यात था कि वे एक खास वर्ग की राजनीति करते हैं और भारतीय जनता पार्टी भी उनकी राजनीतिक शैली से पूरी तरह सहमत नहीं है। लेकिन उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने जिस तरह अपनी पकड़ बनाई है और देश में एक अलग माडल खड़ा दिया है, वह सर्वत्र चर्चा का विषय है। इससे यह भी साबित हो रहा है कि 'अपनी राजनीति' के प्रति भाजपा का आत्मदैन्य कम हो रहा है। वहीं असम में हेमंत विश्वशर्मा उम्मीदों का चेहरा बनकर उभरे हैं, असम में तीसरी बार सरकार बनाकर भाजपा ने पूर्वोत्तर में इतिहास रच दिया है। इसी तरह गृहमंत्री अमित शाह की रणनीति से पश्चिम बंगाल की विजय ऐतिहासिक कही जा रही है और वहां बने मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के ताबड़तोड़ फैसलों ने जनविश्वास की हिलोरें पैदा की हैं। जड़ता को तोड़कर एक नई उम्मीद बनी है। केंद्रीय राजनीति में नरेंद्र मोदी और अमित शाह के आगमन ने भारतीय राजनीति के परिदृश्य को बदलकर रख दिया है।

वैचारिक हीनग्रंथि से बाहर आई भाजपा – भाजपा का आज तक का ट्रैक हिंदुत्व का वैचारिक और राजनीतिक इस्तेमाल कर सत्ता में आने का रहा है। देश की राजनीति में चल रहे विमर्श में भाजपा बड़ी चतुराई से इस कार्ड का इस्तेमाल तो करती थी, किंतु उसके नेतृत्व में इसे लेकर एक हिचक बनी रहती थी। वो हिचक अटल जी से लेकर आडवानी तक हर दौर में दिखी है। भाजपा का हर नेता सत्ता पाने के बाद यह साबित करने में लगा रहता है वह अन्य दलों के नेताओं के कम 'सेकुलर' नहीं है। उत्तर प्रदेश की 'आदित्यनाथ परिघटना' दरअसल भाजपा की वैचारिक हीनग्रंथि से मुक्ति को स्थापित करती नजर आती हैं। नरेंद्र मोदी के राज्यारोहण के बाद योगी आदित्यनाथ का उदय भारतीय राजनीति में एक अलग किस्म की राजनीति की स्वीकृति का प्रतीक है। एक धर्मप्राण देश में धार्मिक प्रतीकों, भगवा रंग, सन्यासियों के प्रति जैसी विरक्ति मुख्यधारा की राजनीति में दिखती थी, वह अन्यत्र दुर्लभ है। भाजपा जैसे दल भी इस सेकुलर विकार से कम ग्रस्त न थे। धर्म और धर्माचार्यों का इस्तेमाल, धार्मिक आस्था का दोहन और सत्ता पाते ही सभी धार्मिक प्रतीकों से मुक्ति लेकर सारी राजनीति सिर्फ तुष्टीकरण में लग जाती थी। प्रधानमंत्रियों समेत जाने कितने सत्ताधीशों के ताज जामा मस्जिद में झुके होगें, लेकिन हिंदुत्व के प्रति उनकी हिचक निरंतर थी।

यह भी कम आश्चर्यजनक नहीं की एक समय में दीनदयाल जी उदार थे, तो अटलजी और बलराज मधोक अपनी वक्रता के चलते उग्र नेता माने जाते थे। अटलजी का दौर आया तो लालकृष्ण आडवाणी उग्र कहे जाने लगे, फिर एक समय ऐसा भी आया जब आडवानी उदार हो गए और नरेंद्र मोदी उग्र मान जाने लगे। आज की व्याख्याएं सुनें- नरेंद्र मोदी उदार हो गए हैं और योगी आदित्यनाथ और गृहमंत्री अमित शाह उग्र माने जाने लगे हैं। अब तो असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्वशर्मा और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी भी आदित्यनाथ की परंपरा के मुख्यमंत्री कहे जाने लगे हैं।

सेकुलर संक्रमण से मुक्ति से मिली नई पहचान – यह मीडिया, बौद्धिकों की अपनी रोज बनाई जाती व्याख्याएं हैं। लेकिन सच यह है कि अटल, मधोक, आडवानी, मोदी, अमित शाह या आदित्यनाथ, हेमंत विश्वशर्मा और शुभेंदु अधिकारी कोई अलग-अलग लोग नहीं है। एक विचार के प्रति समर्पित राष्ट्रनायकों की सूची है यह। इसमें कोई कम जा ज्यादा उदार या कठोर नहीं है। किंतु भारतीय राजनीति का विमर्श ऐसा है जिसमें वास्तविकता से अधिक ड्रामे पर भरोसा है। भारतीय राजनेता की मजबूरी है कि वह टोपी पहने, रोजा भले न रखे किंतु इफ्तार की दावतें दे। आप ध्यान दें सरकारी स्तर पर यह प्रहसन लंबे समय से जारी रहा है। भाजपा भी इसी राजनीतिक क्षेत्र में काम करती है। उसमें भी इस तरह के रोग हैं। वह भी राष्ट्रनीति के साथ थोड़े तुष्टिकरण को गलत नहीं मानती। जबकि उसका अपना नारा रहा है सबको न्याय, तुष्टिकरण किसी का नहीं। उसका एक नारा यह भी रहा है-राम, रोटी और इंसाफ।

लंबे समय के बाद भाजपा में अपनी वैचारिक लाइन को लेकर गर्व का बोध दिख रहा है। असलबाद वे भारतीय राजनीति के सेकुलर संक्रमण से मुक्त होकर अपनी वैचारिक भूमि पर गरिमा के साथ खड़े दिख रहे हैं। समझौतों और आत्मसमर्पण की मुद्राओं के बजाए उनमें अपनी वैचारिक भूमि के प्रति हीनताग्रंथि के भाव कम हुए हैं। अब वे अन्य दलों की नकल के बजाए एक वैचारिक लाइन लेते हुए दिख रहे हैं। दिखावटी सेकुलरिज्म के बजाए वास्तविक राष्ट्रीयता के उनमें दर्शन हो रहे हैं। मोदी जब एक सौ चालीस करोड़ हिंदुस्तानियों की बात करते हैं तो बात अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक से ऊपर चली जाती है। यहां देश सम्मानित होता है, एक नई राजनीति का प्रारंभ

दिखता है। एक भगवाधारी संन्यासी जब मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठता है तो वह एक नया संदेश देता है। वह संदेश त्याग का है, परिवारवाद के विरोध का है, तुष्टिकरण के विरोध का है, सबको न्याय का है।

भारतीयता का विमर्श अब केंद्रीय विमर्श – आजादी के बाद के सत्तर सालों में देश की राजनीति का विमर्श भारतीयता और उसकी जड़ों की तरफ लौटने के बजाए घोर पश्चिमी और वामपंथी रह गया था। जबकि बेहतर होता कि आजादी के बाद हम अपनी ज्ञान परंपरा की और लौटते और अपनी जड़ों को मजबूत बनाते। किंतु सत्ता, शिक्षा, समाज और राजनीति में हमने पश्चिमी तो, कहीं वामपंथी विचारों के आधार पर चीजें खड़ी कीं। इसके कारण हमारा अपने समाज से ही रिश्ता कटता चला गया। सत्ता और जनता की दूरी और बढ़ गयी। सत्ता दाता बन बैठी और जनता याचक। सेवक मालिक बन गए। ऐसे में लोकतंत्र एक छद्म लोकतंत्र बन गया। यह लोकतंत्र की विफलता ही है कि हम सत्तर साल के बाद सड़कें बना रहे हैं। यह लोकतंत्र की विफलता ही है कि हमारे अपने नौजवानों ने भारतीय राज्य के खिलाफ बंदूकें उठा रखी थीं। गृहमंत्री अमित शाह के दृढ़संकल्प की बदौलत आज माओवादी आतंक का अंत भी हमने देखा। पिछले सत्तर सालों में लोक तंत्र की विफलता की ये कहानियां सर्वत्र बिखरी पड़ी हैं। राजनीतिक तंत्र के प्रति उठा भरोसा भी साधारण नहीं था। आज ऐसा लगता है कि राजनीति से कुछ हो सकता है। मोदी, शाह, आदित्यनाथ भरोसे के प्रतीक बन गए। इसका मतलब यह भी है कि ये कुछ कह रहे हैं तो करेंगे भी।

नरेंद्र मोदी, अमित शाह, आदित्यनाथ देश की इन्हीं उम्मीदों के चेहरे हैं। तीनों अंग्रेजी नहीं बोलते। तीनों जन-मन-गण के प्रतिनिधि हैं। यह भारतीय राजनीति का बदलता हुआ चेहरा है। क्या सच में भारत खुद को पहचान रहा है? वह जातियों, पंथों, क्षेत्रों की पहचान से अलग एक बड़ी पहचान से जुड़ रहा है- वह पहचान है भारतीय होना, राष्ट्रीय होना। एक समय में राजनीति हमें नाउम्मीद करती हुयी नजर आती थी। बदले समय में वह उम्मीद जगा रही है। कुछ चेहरे ऐसे हैं जो भरोसा जगाते हैं। एक आकांक्षावान भारत बनता हुआ दिखता है। यह आकांक्षाएं राजनीति दलों के एजेंडे से जुड़ पाएं तो देश जल्दी और बेहतर बनेगा। राजनीतिक विमर्श और जनविमर्श को साथ लाने की कवायद हमें करनी ही होगी। जल्दी बहुत जल्दी। यह जितना और जितना जल्दी होगा भारत अपने भाग्य पर इठलाता दिखेगा। (लेखक राजनीतिक विश्लेषक और वरिष्ठ पत्रकार हैं।) (इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

नागरिकता के दस्तावेजों पर इतना भ्रम ठीक नहीं..

(अरोश चतुर्वेदी)

आधुनिक विश्व व्यवस्था की एक खामी यह है कि यहां कानून की भाषा अलग होती है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि कानूनी भाषा जटिल होती है और उसके शब्द जाल को आम आदमी नहीं समझ पाता। इसी आधार पर उसकी अवधारणाएं विकसित होती हैं और फिर वह किसी विषय का व्यवस्था को लेकर अपनी राय बनाता है।

पिछले कुछ वर्षों में पासपोर्ट हासिल करना आसान हो गया है। इसकी वजह तकनीकी क्रांति तो है ही, लेकिन सरकारी नीतियों ने भी आम आदमी के लिए पासपोर्ट बनवाने की प्रक्रिया को आसान किया है। पासपोर्ट हासिल करने के कठिन दौर से लेकर आसानी से प्राप्त होने के मौजूदा दौर में, आम नागरिक इसे अपनी नागरिकता का एक वैध दस्तावेज मानता रहा है। लेकिन पासपोर्ट सेवा दिवस के मौके पर भारतीय विदेश मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के पासपोर्ट को लेकर दिए बयान ने विवाद खड़ा कर दिया है। इस अधिकारी के मुताबिक, भारतीय पासपोर्ट सिर्फ विदेश यात्रा के लिए एक दस्तावेज है, भारतीय नागरिकता का सबूत नहीं। जहां पासपोर्ट हासिल करने को चार धाम यात्रा जैसी उपलब्धि माना जाता रहा हो, जहां किसी व्यक्ति की पहचान के लिए मजबूत सरकारी दस्तावेज माना जाता रहा हो, वहां ऐसा बयान आएगा तो विवाद होगा ही। तो विवाद हो रहा है। विशेष रूप से सोशल मीडिया पर लोग पूछ रहे हैं कि अगर आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, पैन कार्ड और पासपोर्ट नागरिकता का वैध दस्तावेज नही है तो फिर कोई भारतीय नागरिक अपनी नागरिकता के लिए क्या सबूत पेश करे।

भारतीय पासपोर्ट अधिनियम के शब्दों से गुजरें तो विदेश मंत्रालय के अधिकारी का कहना गलत भी नहीं है, लेकिन हाल के दिनों में मतदाता सूचियों के विशेष और गहन परीक्षण के दौरान जब घोषित कर दिया गया कि किसी व्यक्ति के पास आधार कार्ड, पैन कार्ड या मतदाता पहचान पत्र होना उसकी नागरिकता के सबूत नहीं है और अब पासपोर्ट भी नहीं रहा, तो फिर भारतीय नागरिक क्या करे। जरूरत पड़ने पर वह कैसे साबित करे कि वह भारतीय नागरिक है। इस आधार पर तो देश के ज्यादातर

लोग अपनी नागरिकता को तो साबित ही नहीं कर पाएंगे। यही वजह है कि लोगों का गुस्सा फूट पड़ा है। आज के दौर की तमाम लड़ाइयों का बुनियादी और मजबूत आधार चूंकि नैरेटिव बन गया है तो यह भी साबित करने की कोशिश होगी कि मोदी सरकार ने जानबूझकर ऐसा किया है। इसके लपेटे में मोदी समर्थक ताकतें भी आएंगी, भारतीय जनता पार्टी पर तो खैर सवाल उठेगा ही। इस नैरेटिव को खड़ा होने से पहले ही जरूरी है कि नागरिकता के वैध दस्तावेज को लेकर जारी भ्रम को जल्द से जल्द दूर किया जाए। अन्यथा भ्रम का यह कुहासा जितना फैलेगा, वह आम नागरिक के मन में व्यवस्था के प्रति गुस्सा और क्षोभ भरेगा। इससे तनाव बढ़ाने वाली ताकतों को भी मौका मिलेगा।

पासपोर्ट को लेकर विदेश मंत्रालय के अधिकारी ने जो कहा है, वह गलत भी नहीं है। अपने देश में भारतीय पासपोर्ट अधिनियम 1967 के तहत जारी किया जाता है। जबकि भारत में नागरिकता की व्याख्या और प्रमाणिकता के लिए भारतीय नागरिकता कानून 1955 है। पासपोर्ट एक्ट की धारा 20 के मुताबिक, अगर केंद्र सरकार चाहे तो किसी ऐसे व्यक्ति को भी पासपोर्ट या यात्रा दस्तावेज जारी कर सकती है जो भारत का नागरिक नहीं है। बस शर्त यह होगी कि सरकार को ऐसा लगे कि उसके लिए पासपोर्ट जारी करना व्यापक जनहित में जरूरी है। इस कानून से साफ है कि पासपोर्ट और नागरिकता दो अलग अलग चीजें हैं। बेशक भारतीय पासपोर्ट सिर्फ भारतीयों को ही मिलता है, लेकिन यह पत्थर की लकीर जैसा नियम नहीं है। पासपोर्ट अधिनियम की धारा 20 भारत सरकार को छूट देती है कि व्यापक जनहित में वह भारतीय नागरिक ना होने के बावजूद किसी व्यक्ति को पासपोर्ट जारी कर सकती है।

विदेश मंत्रालय के अधिकारी के बयान पर भले ही विवाद खड़ा हुआ हो, लेकिन पासपोर्ट के जरिए नागरिकता प्रमाणित करने के तीन अभियुक्तों समेत चार लोगों के दावे को बांबे हाईकोर्ट 2013 में ही खारिज कर चुका है। उन्होंने अपनी नागरिकता के लिए पासपोर्ट पेश किया था। बांबे हाईकोर्ट ने दो सितंबर 2013 के अपने फैसले में साफ कर दिया था कि अगर आपका जन्म 1987 के बाद हुआ है तो पासपोर्ट को अपनी नागरिकता के प्रमाण पत्र के रूप में नहीं पेश कर सकते। वैसे आधार कार्ड का कानून भी मानता है कि आधार कार्ड सिर्फ निवास और पहचान का प्रमाण है, नागरिकता का नहीं। आधार कानून 2016 की धारा में साफ लिखा है कि आधार कार्ड से नागरिकता की बजाय सिर्फ निवास स्थान और पहचान प्रमाणित होता है। इसकी वजह यह है कि आधार कानून के तहत 182 दिनों तक भारत में लगातार रहने वाले व्यक्ति को सरकार चाहे तो आधार कार्ड जारी कर सकती है। इसी आधार पर सर्वोच्च न्यायालय भी इसे नागरिकता का प्रमाण मानने से इनकार कर चुका है। इसी तरह पैन कार्ड के लिए भी व्यवस्था दी गई है। पैन कार्ड का कानूनी आधार है कि व्यक्ति अर्जन कर रहा है और टैक्स दे रहा है।

आधुनिक विश्व व्यवस्था की एक खामी यह है कि यहां कानून की भाषा अलग होती है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि कानूनी भाषा जटिल होती है और उसके शब्द जाल को आम आदमी नहीं समझ पाता। इसी आधार पर उसकी अवधारणाएं विकसित होती हैं और फिर वह किसी विषय का व्यवस्था को लेकर अपनी राय बनाता है। प्रधानमंत्री मोदी को इन जटिलताओं की समझ है, शायद यही वजह है कि उनके कार्यकाल में देश के सैकड़ों गैरजरूरी कानूनों को या तो रद्द किया गया है या फिर कुछ नए संदर्भों वाले कानूनों में समाहित कर दिया गया है।

वर्ग पहेली 6138

1	2	■	3	4	5		6
7		■	8			■	
■	9	10		■	11	12	
13			■	■	■		■
■	14		15	■	16		17
18	■	19		20	■	21	
	■	22			■	23	
24		■		■	25	■	■

संकेत: बाएं से दाएं

1. एक गणराज्य जिसे यूनान भी कहते है जिसकी राजधानी एथेंस है (2)
3. यह भारत की प्रमुख नदी ह जिसका उद्गम राजस्थान के उदयपुर जिले में अरावली पर्वतमालाओं से होता है (5)
7. बायां, चंद्रमा के रथ के एक घोड़े का नाम (2)
8. किसी का नष्ट-अनिष्ट करने वाले चेतावनी भरे शब्द (3)
9. देश-प्रदेश में शांति व्यवस्था बनाए रखने के नियम (3)
11. तड़का, छौंका (3)
13. फला हुआ, फलीभूत (3)
14. धतूरा, स्वर्ण (3)
16. ऊपर से नीचे पहुंचाना, घुसाना (3)
19. न्योछावर करना, उत्सर्ग करना (3)
21. गहरा दुख, शोक (2)
22. चिरस्थाई, जो सदा टिक कर रहे (3)
23. घ्राणेन्द्रिय, नासिका (2)
24. निशाना, अनुमान योग्य वस्तु (2)
25. एक स्वीकृति सूचक अव्यय या शब्द (1)

(ऊपर से नीचे

1. गरदन, गला (2)
2. एक हीसमय होने वाला (5)
3. कार्यपूर्ति का माध्यम, जरिया, उपाय (3)
4. एक तरह का विस्फोटक रासयानिक गोला (2)
5. एक स्त्री से प्रेम करने वाले दो व्यक्ति यह कहलाते है (उर्दू)(3)
6. मुर्गे की जाति का प्रसिद्ध पक्षी (3)
10. नई बातों को अपनाने का सिद्धांत (5)
12. उपयुक्त अवसर मिलना (5)
15. कार्य में लगाना (4)
17. नामधारण करने वाला, नाम वाला, नाम का (3)
18. यह सर्वाधिक आक्सीसन देने वाला वृक्ष है (3)
20. नामवाला, नामवर, प्रसिद्ध (2)

वर्ग पहेली 6137 का हल

बं	कि	म	च	न्द्र	■	नौ	रू
दी	न	■	क्षु	■	र	क	म
ज	का	र्ता	■	हं	ग	री	■
न	■	■	द	स	■	दे	श
■	त	ला	श	■	प	ना	ह
सु	■	म	म	ता	■	■	र
चि	र	का	ल	■	मृ	ग	वा
त्रा	■	न	व	ल	■	ज	र

समग्र हिंदुत्व की राह पर भाजपा

(मृत्युंजय दीक्षित)

प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी की नई टीम में सपा के पीडीए की धारकुंद करने का प्रयास किया गया है। राज्य में भाजपा का संगठन 6 क्षेत्रों में विभाजित है। इनमें पश्चिम नवाब सिंह नागर को, ब्रज क्षेत्र में पूरन लाल लोधी तथा कानपुर क्षेत्र में राम किशोर साहू अध्यक्ष बने हैं। काशी क्षेत्र के अध्यक्ष अशोक चौरसिया बनाए गए हैं।

वर्ष 2027 के विधानसभा चुनावों के दृष्टिगत उतर प्रदेश में सभी राजनैतिक दलों ने अपनी चुनावी तैयारियों और मुद्दों को अंतिम रूप देना प्रारंभ कर दिया है। इसी क्रम में भारतीय जनता पार्टी ने अपनी बहुप्रतीक्षित कार्यकारिणी भी घोषित कर दी है। माना जा रहा है कि भाजपा की यह टीम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व केंद्रीय नेतृत्व की पसंद से चुनी गई है किन्तु इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भी महती भूमिका है। भाजपा ने अपनी नई टीम में सामाजिक सन्तुलन साधने के साथ ही सपा के पीडीए व बसपा के ब्राह्मण कार्ड को रोकने का प्रबंध किया है। अब चुनाव केवल सामाजिक समीकरण के बल पर ही नहीं जीते जाते इसलिए भाजपा ने अपनी टीम की संरचना से यह भी स्पष्ट किया है कि वह चुनावी दंगल बूथ स्तर पर आकर ही लड़ेगी। भाजपा अब अपने बूथ प्रबंधन को सशक्त करने के लिए काम करेगी जिसके लिए प्रदेश की टीम को एकदम युवा व कर्मठ चेहरे दिए गए हैं। भाजपा की प्रदेश कार्यकारिणी में प्रवक्ताओं की टीम भी घोषित कर दी गई है और सोशल मीडिया प्रमुख की भी नियुक्ति की गई है क्योंकि अब प्रमुख राजनैतिक नैरेटिव युद्ध पारंपरिक और सोशल मीडिया दोनों पर लड़ा जाता है। चुनावी जंग जीतने में मीडिया व सोशल मीडिया भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पश्चिम बंगाल चुनावों में नैरेटिव युद्ध ने भाजपा की विजय में बड़ी भूमिका निभाई थी।

भाजपा की नई कार्यकारिणी से यह बात भी साफ हो गई है कि आगामी विधानसभा चुनाव मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के चेहरे व हिंदुत्व की धर तेज करके ही लड़ा जाएगा। प्रदेश में योगी जी का एक रहेंगे तो नेक रहेंगे तथा बटेंगे तो कटेंगे का नारा फिर चलने वाला है। प्रदेश के आम हिन्दू जनमानस को योगी जी पर पूरा भरोसा है विशेषकर कानून व्यवस्था व नारी सुरक्षा आदि विषयों के कारण।

प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी की नई टीम में सपा के पीडीए की धारकुंद करने का प्रयास किया गया है। राज्य में भाजपा का संगठन 6 क्षेत्रों में विभाजित है। इनमें पश्चिम नवाब सिंह नागर को, ब्रज क्षेत्र में पूरन लाल लोधी तथा कानपुर क्षेत्र में राम किशोर साहू अध्यक्ष बने हैं। काशी क्षेत्र के अध्यक्ष अशोक चौरसिया बनाए गए हैं। अवध के क्षेत्रीय अध्यक्ष अवधेश द्विवेदी बने हैं। गोरखपुर क्षेत्र की कमान विनोद राय को मिली है जो भूमिहार हैं। प्रदेश में 19 उपाध्यक्ष बनाए गए हैं और इनमें भी ओबीसी वर्ग को प्राथमिकता दी गई है। 8 महामंत्रियों की सूची मे भी 4 ओबीसी वर्ग के हैं।

प्रदेश भाजपा कार्यकारिणी के चयन में सामाजिक संतुलन के साथ-साथ क्षेत्रीय संतुलन साधने का प्रयास भी किया गया है। सपा छोड़कर भाजपा में शामिल हुई पूजा पाल को प्रयागराज में जिम्मेदार दी गई है। एक समय प्रयागराज में माफिया अतीक अहमद का आतंक था और उस पर पूजा पाल के पति राजू पाल की हत्या का आरोप था। भाजपा ने अपनी कार्यकारिणी के माध्यम से दलित गैर-जाटव समुदाय से पासी और कोरी समाज को भी साधने का प्रयास किया है। भाजपा ने कुशवाहा, मौर्य और सैनी समुदाय से तीन नेताओं को उपाध्यक्ष बनाया है जाट, कुर्मी, यादव और पाल समाज से भी उपाध्यक्ष बनाया गया।

भाजपा की कार्यकारिणी से प्रतीत हो रहा है कि भाजपा के तरकश में अभी कई तीर छिपे हैं। यह बात तो तय हो गई है कि अब भाजपा समग्र हिंदुत्व की राजनीति करने जा रही है। भाजपा व संघ द्वारा अब प्रदेश में बंगाल की ही तरह 94 प्रतिशत हिंदू मतदाताओं को एकजुट करने का प्रयास किया जाएगा।

आज का राशिफल

मेष

आज साझेदारियों से धन प्रवाह और टीम वर्क का महत्व को समझे। आज आपका आर्थिक तालमेल अच्छा बना रहेगा, बशर्ते आप बिना वजह के खर्चों से खुद को दूर रखें। कोई बड़ी खरीदारी करने या किसी नए काम में धन लगाने से पहले अच्छी तरह विचार कर लें।

वृष

धन के मामले आज पूरी तरह आपके नियंत्रण में रहेंगे। आपकी बनाई योजनाएं आपको अच्छे नतीजे देंगी। बाजार की सुनी-सुनाई बातों में आकर धन लगाने का कोई भी फैसला न लें। रुका हुआ धन या कोई पुराना आर्थिक लाभ आज आप तक पहुंच सकता है।

मिथुन

आज आय में सुधार के योग और प्रभावशाली संवाद शैली रहेगी। घर-परिवार और अपनी सुख-सुविधाओं से जुड़े खर्चों पर थोड़ा ध्यान देने की जरूरत है। बुध देव के अस्त और वक्री होने के कारण धन से जुड़े किसी भी कागजात पर बिना पढ़े आगे न बढ़ें।

कर्क

आज पारिवारिक संपर्कों से लाभ और पेशेवर विकास के अवसर। धन को सुरक्षित रखने में मदद मिलेगी। हालांकि, आज कोई बहुत बड़ा निवेश करने के लिए दिन ठीक नहीं है। घर के धन से जुड़े मामलों पर खुलकर बात करें ताकि आपसी तालमेल बना रहे।

सिंह

आज पैसों का उपयोग बहुत ही समझदारी से करें और दिखावे की चीजों को अभी टाल दें। कुछ ऐसे खर्चे सामने आ सकते हैं जिनकी पहले से योजना नहीं थी, इसलिए बजट का ध्यान रखना जरूरी रहेगा। जोखिम भरे निवेशों से आज पूरी तरह दूर रहें।

कन्या

आज आर्थिक स्थिति सामान्य रूप से चलती रहेगी, हालांकि कुछ छोटे-छोटे अनचाहे खर्चे सामने आ सकते हैं। आज अपनी बचत योजनाओं या बीमा से जुड़े कागजातों को देखने के लिए समय बहुत अच्छा है। पूरी जानकारी के बिना धन का कोई जोखिम न लें।

तुला

पैसों को लेकर आपका अनुशासन आज आपकी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाए रखेगा। यदि आप कहीं से धन आने की उम्मीद कर रहे हैं, तो उसमें थोड़ा समय लग सकता है। बिना पूरी बातचीत के किसी के साथ मिलकर धन का कोई नया काम शुरू न करें।

वृश्चिक

आज का दिन अपनी पुरानी योजनाओं और आर्थिक लक्ष्यों को एक बार फिर से परखने का है। जल्दबाजी में धन लगाने या किसी को बड़ी रकम उधार देने से पूरी तरह बचें। घर के बड़ों से धन के मामले में कोई अच्छी सलाह मिल सकती है।

धनु

आज आपकी ही राशि में बने हुए हैं, जिससे आर्थिक मामलों को लेकर मन में उत्साह रहेगा। हालांकि, धन के लेनदेन में जरूरत से ज्यादा उत्साही होने से बचें। जोखिम भरे कामों में धन लगाने से पहले दो बार सोचें। आपका अनुशासित तरीका ही आपकी आर्थिक स्थिति को मजबूत रखेगा।

मकर

आपकी व्यावहारिक सोच आज आपको धन से जुड़े सही निर्णय लेने में मदद करेगी। परिवार या जमीन-जायदाद से जुड़े मामलों में भावुक होकर कोई बड़ा खर्चा न करें। तुरंत मिलने वाले लाभ के बजाय लंबे समय के सुरक्षित निवेश ज्यादा भरोसेमंद रहेंगे।

कुंभ

आज आपकी आर्थिक योजनाएं अच्छे से काम करेंगी। अपने कानूनी या टैक्स से जुड़े दस्तावेजों को बहुत ही ध्यान से देखें। जल्दबाजी में किसी को धन उधार न दें और न ही कोई आर्थिक जोखिम उठाएं। खर्चों में किया गया थोड़ा सा सुधार आपकी भविष्य की बचत को और बेहतर बनाएगा।

मीन

आर्थिक रूप से समय उत्साहजनक बना हुआ है। बिना पूरी छानबीन के कोई भी बड़ा वादा न करें। लगातार किए जा रहे प्रयासों से आपकी आय में धीरे-धीरे सुधार देखने को मिलेगा। भविष्य को मजबूत करने के लिए खर्च और बचत के बीच एक अच्छा तालमेल बनाकर चलें।

पिता ही नहीं, मां की संपत्ति में भी है बेटियों का समान अधिकार

हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 के सेक्शन 16 के तहत मां की प्रॉपर्टी में बेटी का समान अधिकार होता है। फिर चाहे बेटी अविवाहित हो या शादीशुदा। इससे बेटियों के हक में कोई फर्क नहीं पड़ता। मां ने कोई संपत्ति चाहे खुद अर्जित की हो या वह उसे वसीयत में मिली हो। वह इसे अपनी बेटियों को दे सकती है।

आमतौर पर जब लड़कियों के प्रॉपर्टी संबंधी अधिकारों की बात होती है, तो हमेशा पिता की संपत्ति में बेटियों के हकों की ही चर्चा होती है जिसमें कि हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 में संशोधन के बाद साल 2005 से हर बेटी को पैतृक संपत्ति में समान अधिकार मिल चुका है, फिर चाहे पिता की संपत्ति स्वअर्जित हो या पैतृक। लेकिन आमतौर पर हम मां की संपत्ति में बेटियों का क्या हक है, इसके बारे में अकसर चर्चा नहीं करते और लोगों को इस संबंध में कुछ पता भी नहीं होता।

अगर कोई महिला अपने जीवन में कोई भी प्रॉपर्टी चाहे वह घर, जमीन या कोई चल- अचल संपत्ति हो, खुद से अर्जित करती है या उसे वह उसकी मां- पिता या पति से उत्तराधिकार के रूप में मिलती है तो वह इसे अपनी मर्जी से जिसे चाहे दे सकती है।अगर महिला अपनी संपत्ति को कानूनी रूप से किसी को दिए या वसीयत किए बिना मर जाती है, तो उसकी उस संपत्ति पर पति, बेटा और बेटी का समान अधिकार होता है। इनकी अनुपस्थिति में परिवार के उन सभी सदस्यों के बीच, जिन्हें उस महिला के संबंध में प्रथम श्रेणी का उत्तराधिकारी माना जाता है, इसे समान रूप से बांटे जाने का प्रावधान है।

हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 के सेक्शन 16 के तहत मां की प्रॉपर्टी में बेटी का समान अधिकार होता है। फिर चाहे बेटी अविवाहित हो या शादीशुदा। इससे बेटियों के हक में कोई फर्क नहीं पड़ता। मां ने कोई संपति चाहे खुद अर्जित की हो या वह उसे वसीयत में मिली हो। वह इसे अपनी बेटियों को दे सकती है। लेकिन अगर उसने जीते जी अपनी संपत्ति किसी को नहीं दी और उसकी मौत हो जाती है, तो फिर यह संपत्ति बेटियों सहित सभी कानूनी उत्तराधिकारियों के बीच समान रूप में बंटेगी। अगर किसी लड़की को उसका भाई या पिता मां की संपत्ति में हिस्सा नहीं देता तो लड़की इसके लिए अदालत का दरवाजा खटखटा सकती है। भाई या पिता या कोई भी पहली श्रेणी का उत्तराधिकारी महिला की लड़की को उसकी संपत्ति में हिस्सा पाने से रोक नहीं सकता। चाहे वह अविवाहित हो या विवाहित। यहां तक कि किसी विवाहित लड़की के बच्चों का भी अपनी नानी की संपत्ति में हक होता है, साथ ही दामाद को भी सास की संपत्ति में हक होता है बशर्ते बच्चों की मां जिंदा न हो। दरअसल जब किसी महिला की मृत्यु हो जाती है तो उसके बाद उसकी किसी भी संपत्ति में सबसे पहला प्राकृतिक अधिकार पति और उसके बच्चों का होता है, इसके बाद अन्य प्राकृतिक सदस्य आते हैं।

लेकिन अगर किसी महिला ने शादी ही नहीं की या उसकी शादी नहीं हुई, ऐसी स्थिति में उसके मरने के बाद उसकी संपत्ति पर पहले पिता और फिर पिता के वारिसों का हक होगा। अगर पिता के वारिस भी नहीं हैं तो मां के वारिस उसकी प्रॉपर्टी पर हक जता सकते हैं। हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956 साफ तौर पर कहता है कि यदि मां की मृत्यु बिना वसीयत तैयार किए हो जाती है, तो बेटी को भी बेटे के साथ संपत्ति में समान हिस्सा मिलेगा, चाहे वह विवाहित हो या अविवाहित।

सर्दियों में संभालें अपनी सुंदरता

दिन में अगर कई बार मुंह धोना हो तो हर बार फेसवॉश का भी इस्तेमाल न करें। सिर्फ साफ और शीतल पानी से चेहरा धोएं। अगर सर्दियों के दिनों में दिन में ही त्वचा में खुरदुरापन महसूस हो तो तुरंत मॉश्चराइजर लगाना चाहिए। इस मौसम में अपनी एड़ियों पर खास ध्यान देना चाहिए, क्योंकि शरीर के दूसरे हिस्सों की तरह सर्दियों में पैरों की भी नमी काफी कम हो जाती है और इससे एड़ियां फटने लगती हैं तथा पैर गंदे दिखने लगते हैं।

सर्दियों में त्वचा की समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए कुछ बातों को ध्यान में रखना बहुत जरूरी होता है जैसे इस मौसम में बार- बार गुनगुने पानी को इस्तेमाल से बचना चाहिए। यह गुनगुना पानी भले हमें तात्कालिक रूप से राहत दे, लेकिन पानी का गुनगुनापन शरीर के कुदरती तेल को सोख लेता है या नष्ट कर देता है, जिसकी वजह से शरीर में ड्राइनेस बढ़ जाती है। जरूरी है कि इन दिनों जब भी नहाएं, नहाने के तुरंत बाद त्वचा को मॉश्चराइज करें। अगर नहीं करेंगे तो जल्द ही त्वचा में क्रैक्स और विंटर एग्जिमा के लक्षण दिखने शुरु हो जाएंगे।

अगर आपके लिए सर्दियों में ठंडे पानी से नहाना संभव नहीं है तो गर्म पानी से नहाने के तुरंत बाद शरीर को, विशेषकर चेहरे को कुदरती हाइड्रेटिंग वाले पदार्थों से मॉश्चराइज करना चाहिए। बॉडी बटर लोशन इसके लिए उपयुक्त होता है। इस मौसम में सनस्क्रीन का लगाना गर्मियों से भी ज्यादा जरूरी है। कई लोग सोचते है कौन इतनी तीखी धूप निकलती है। लेकिन भले एहसास न हो, मगर सर्दियों की धूप भी त्वचा के लिए उतनी ही हानिकारक है, जितनी गर्मियों की होती है। त्वचा को इस मौसम में भी पराबैंगनी किरणों के दुष्प्रभाव से बचाना जरूरी होता है, इसलिए सर्दियों में जब भी बाहर निकलें, सनस्क्रीन लगाकर निकलें।

दिन में अगर कई बार मुंह धोना हो तो हर बार फेसवॉश का भी इस्तेमाल न करें। सिर्फ साफ और शीतल पानी से चेहरा धोएं। अगर सर्दियों के दिनों में दिन में ही त्वचा में खुरदुरापन महसूस हो तो तुरंत मॉश्चराइजर लगाना चाहिए। इस मौसम में अपनी एड़ियों पर खास ध्यान देना चाहिए, क्योंकि शरीर के दूसरे हिस्सों की तरह सर्दियों में पैरों की भी नमी काफी कम हो जाती है और इससे एड़ियां फटने लगती हैं तथा पैर गंदे दिखने लगते हैं। इसके लिए इस मौसम में नेचुरल ऑयलयुक्त पैरों की क्रीम का इस्तेमाल करना चाहिए और हाथों की तरह पैरों की स्क्रबिंग करके डेड स्किन निकाल देना चाहिए। ऐसा करने से पैर सुंदर और मुलायम रहते हैं। इस मौसम में विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर मौसमी फलों का सेवन करना चाहिए। जहां तक सब्जियों की बात है तो जितनी भी सब्जियां इस मौसम में आती हैं, उन सभी सब्जियों को खाना चाहिए। फूलगोभी, पालक, हरे मटर और गाजर सिर्फ हमारी जीभ के स्वाद को ही संतुष्ट नहीं करतीं बल्कि ये सब्जियां हमारी त्वचा को भी जरूरी पोषण देती हैं, जिससे वह स्वस्थ चमकदार और टाइट रहती है।

सर्दियों में मेथी दाना रखता है रोगों से दूर, गरमाइश से भरपूर

यूं तो अगर सूची बनायी जाए कि सर्दियों में सबसे उपयोगी हर्ब्स या जड़ी बूटियां कौन सी होती हैं? जो सबके लिए उपयोगी हो सकती हैं, तो उनमें एक मेथी दाना जरूर शामिल होगा। सर्दियों में मेथी दाना न सिर्फ आपको गरमाइश से भरपूर रखता है बल्कि इन दिनों शरीर की कमजोर हो जाने वाली रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी यह मजबूत बनाता है। इस कारण यह सर्दियों के लिए एक औषधीय दाने से कम नहीं है। वैसे भी मेथी के हर हिस्से में चाहे उसकी पत्तियां हों, चाहे उसकी टहनियां हों, चाहे उसका तेल हो या दाना इन सबमें औषधीय गुणों की भरमार होती है। अपने इन्हीं गुणों और न्यूट्रियंट्स की वजह से मेथी डायबिटीज को कंट्रोल करने में बहुत मददगार होती है। हर दिन खाली पेट भीगे हुए मेथी दाना खाने से शरीर को सभी तरह

के बैक्टीरिया और वायरस से लड़ने हेतु जरूरी ताकत मिलती है। मेथी दाना में क्योंकि गैलेक्टोगॉग्स नाम का एक कंपाउंड होता है, जिस कारण दूध पिलाने वाली मांओं में इसके उपयोग से भरपूर दूध बनता है। मेथी दाना कैल्शियम से भरपूर होता है, इसलिए जब हम भीगा हुए मेथी दाना सुबह खाली पेट खाते हैं तो हमारी हड्डियां मजबूत होती हैं और जोड़ों के दर्द से छुटकारा मिलता है। इससे वजन कम करने में भी मदद मिलती है और नियमित रूप से इसका सेवन करने से खराब कोलेस्ट्रोल घटता है व अच्छा कोलेस्ट्रोल बढ़ता है। यह ब्लड शुगर को कंट्रोल करने में भी कारगर है, इसलिए डायबिटीज के मरीजों को रातभर भीगे हुए मेथी दाने का पानी पीने से काफी फायदा होता है।

सावधानी जरूरी : इस्तेमाल ज्यादा होने पर यह पेट खराब कर देता है। शुगर लेवल कम हो सकता है, शरीर में गैस बनने लगती है, पेट खराब हो जाता है, जिससे पतले दस्त शुरू हो जाते हैं और मतली भी आती है। कुछ लोगों को इसके खाने से एलर्जी हो जाती है और कुछ लोगों का इसके इस्तेमाल के बाद पेट खराब हो जाता है। ब्लड प्रेशर लो रहता है तो भी मेथी का इस्तेमाल नुकसानदायक हो सकता है।

हैंगिंग पॉट्स में बनाएं अपना पसंदीदा किचन गार्डेन

हैंगिंग पॉट्स दरअसल बालकनी, पोर्च और लिविंग रूम के आसपास लटकते हुए गमले होते है, जिनमें आप घर की खूबसूरती बढ़ाने वाले सुंदर फूलों के पौधे, हरी भरी लताएं और सब्जियां देने वाले पौधे भी लगा सकती हैं। कुछ खास तरह के हैंगिंग प्लांट भी होते हैं, जो दूसरे पौधों से कुछ भिन्न होते है और ये मूलतः हैंगिंग बॉस्केट या हैंगिंग पॉट्स के लिए ही बने होते हैं। दूसरे शब्दों में ये उनके लिए अनुकूल होते हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हैंगिंग पॉट्स में आप अपनी मनचाही चीजें नहीं उगा सकतीं। लोग तो इनमें टमाटर, बैंगन और कई महत्वपूर्ण जड़ी बूटियां भी उगाते हैं। आउटडोर हैंगिंग प्लांट्स में

जेरेनियम, बेगोनिया, पेटूनिया, फ्यूशिया, बोरोटे प्लांट और ट्रेडिशनल फर्न। ये सब वो पौधे हैं जो आमतौर पर हैंगिंग पॉट्स के लिए ही बने हैं।

अब हैंगिंग पॉट्स के लिए पौधे लगाना चाहें तो उसमें पारंपरिक पौधे नहीं बल्कि हैंगिंग प्लांट्स ही लगाएं। हैंगिंग प्लांट्स में सबसे ज्यादा मशहूर मनी प्लांट्स हैं। मनी प्लांट्स के साथ बहुत तरह की कहानियां जुड़ी हुई हैं। शायद इसीलिए यह घर घर का साथी पौधा है। लेकिन ऐसी कहानियों पर ध्यान देने की जरूरत नहीं है, आप इसे महत्वपूर्ण मानकर ही अपने घर में लगाएं। भले इसे शुभ मानें या न मानें, लेकिन इसकी हरियाली आपको सुकून देती ही देती है।

ताकि परेशान न करे सर्दियों में जोड़ों का दर्द

सर्दियां आते ही जोड़ों का दर्द बढ़ जाता है। इसका कारण होता है बढ़ा हुआ यूरिक एसिड। इसलिए जिन लोगों को बढ़े हुए यूरिक एसिड की शिकायत हो, उन्हें सर्दियों में कुछ विशेष तरह की सावधानियां बरतनी चाहिए ताकि यह मौसम उनके लिए परेशानी की वजह न बने।

गर्म पानी का सेवन करें

जिन लोगों को बढ़े हुए यूरिक एसिड की शिकायत रहती है और इसके चलते हड्डियों और जोड़ों में लगातार दर्द रहता हो, उन्हें सर्दियों में लगातार गर्म पानी पीना चाहिए। इससे हड्डियों और जोड़ों में जमा यूरेट क्रिस्टल धीरे धीरे पिघलकर मूत्र के रास्ते शरीर से बाहर निकल जाता है। अगर सर्दियों में कम पानी पीयेंगे तो यूरिक एसिड और ज्यादा परेशान करेगा। दरअसल यह भी एक किस्म का टॉक्सिन है, जो पानी और खासकर गुनगुने पानी के इस्तेमाल से शरीर से बाहर निकलता रहता है। आमतौर पर ढाई से तीन लीटर के बीच प्रतिदिन पानी पीने से स्थितियां काबू में रहती हैं।

खट्टे फलों का सेवन

नींबू, संतरा, आंवला, अनानास, चेरी, स्ट्राबेरी और पपीता आदि कुदरती रूप से विटामिन सी से भरपूर होते हैं। ये सभी प्राकृतिक रूप से यूरिक एसिड को कम करने में मददगार होते हैं। सर्दियों में इनका नियमित सेवन करना चाहिए। खासकर जिन लोगों को हड्डियों और जोड़ों में दर्द की शिकायत रहती हो और जिनका यूरिक एसिड बढ़ा हुआ हो। उन्हें तो जरूर इन फलों को सर्दियों में अपनी नियमित खुराक का हिस्सा बना लेना चाहिए। इनमें सबसे ज्यादा फायदेमंद है आंवला। आंवले में सबसे ज्यादा विटामिन सी होती है। आंवले का इस्तेमाल यूरिक एसिड लेवल को कम करने में बहुत मददगार होता है।

गलत कपड़ों के चयन से कहीं ठंडी न हो जाएं खुशियां...!

दिसंबर, जनवरी के शुरूआती दिनों में शादी हो रही हो, तो इस बात को ध्यान में रखकर ही अपने लिए वेडिंग ड्रेसेस का चयन करें कि इन महीनों की रातें हड्डियों तक को ठंड से हिला देने वाली होती हैं। आइये जानते हैं कि जब जाड़े के महीने में शादी हो रही हो तो कैसी सजगता से अपने लिए वेडिंग ड्रेसेस चुनें।

दिखाएं बुनियादी समझदारी

रात में होने वाली रस्मों में देर तक या तो खुले आसमान के या हल्की सी छांव में बैठना होता है, इसलिए इस मौके में शादी की जो भी पोशाक बनवाएं, कोशिश करें वह सिल्क, वेलवेट या वुलन मिक्स कॉटन की हो। इन फैब्रिक में हर तरह के डिजाइन खूबसूरती से उभरती हैं और ये सर्दी की रातों में आपको गर्म भी रखती हैं।

लहंगा हो ऐसा

सर्दी की शादियों में जब भी लहंगा खरीदने जाएं तो वुलन या वेलवेट को ही चुनें। इन दोनों ही फैब्रिक में एक से बढ़कर एक शानदार मैटीरियल बाजार में उपलब्ध होता है और इनसे बना लहंगा आपका खूबसूरत परी जैसा रूप तो निखारता ही है, आपको अंदर से गर्म भी रखता है, इसलिए आपके चेहरे में गरमाईश की चमक भी रहती है। अगर सर्दी के दिनों की शादियों में दुल्हन को ठंड लग रही हो तो वह कितना ही छिपाए उसके चेहरे में खास तरह की परेशानियां दिख ही जाती हैं। वह रॉयल लुक दिखने में आता ही नहीं, जिससे दुल्हन भीड़ में सबसे

अलग और खास दिखती है। क्योंकि अंदर से जब सर्दी लग जाती है तो किसी चीज में मन नहीं लगता और हर समय तनाव बना रहता है।

बूटीज और स्टॉल

जब घोर सर्दियों के दिनों में आप दुल्हन बन रही हों तो दो बातों का जरूर ख्याल रखें दुपट्टे और ऊंची हील का मोह त्याग दें। दुपट्टे की जगह भारी वेलवेट या कश्मीरी वुलन का हाथ से बुना हुआ स्टॉल कैरी करें। यह दिखने में तो चार चांद लगायेगा ही, आपको गरमाईश भी देगा।

ठीक यही समझदारी ऊंची एड़ी वाली हील्स की जगह बूटीज का चयन करते हुए दिखाएं। एक तो यह आपके लहंगे के लिए कॉम्प्लिमेंट होगी, साथ ही यह आपके ब्राइडल लुक को अतिरिक्त ग्रेस देगी।

फुल स्लीव्स ब्लाउज को तरजीह दें

आप फैशन के नाम पर फुल स्लीव्स ब्लाउज को ही चुनें। इससे सर्दी से भरपूर बचाव होगा। यह दिखने में भी बुरे नहीं लगते बल्कि हाल के सालों में कियारा आडवाणी जैसी नई बॉलीवुड अदाकारा से लेकर नीना गुप्ता जैसी पुरानी अदाकारा ने फिर से शादी के लिए फुल स्लीव्स को पहली पसंद बना दिया है। अगर ब्लाउज को लेकर आपमें किसी तरह का हैंगओवर हो तो उसकी जगह आप जैकेट भी आजमा सकती हैं। यह बिल्कुल मॉडर्न ट्विस्ट होगा। अगर जैकेट कुछ ज्यादा ही ऑड लगने का अंदेशा हो, तो जैकेट स्टाइल में इन दिनों ब्लाउज भी सिले जाते हैं, इसे आजमाएं और ठंड को भी दो ग्यारह कर दें।

चलन में है वुडन फ्लोर्स

हाल के सालों में फिर से वुडनफ्लोर्स को लेकर पूरी दुनिया में क्रेज उभरा है। लकड़ी की फ्लोरिंग न भी करा पाएं तो ऐसी टाइल्स का इस्तेमाल इन दिनों बढ़ा है, जो लकड़ी के रंग और आकार का भ्रम बनाती हैं। वुडनफ्लोर्स की एक वजह यह भी है कि इनकी मेंटिनेंस आसान है। लकड़ी के फ्लोर अगर बदरंग हो जाएं तो उन्हें फिर से आसानी से न सिर्फ रंगीन बल्कि पॉलिश के जरिये बिल्कुल नया बनाया जा सकता है। यही वजह है कि लकड़ी के फर्शों का इन दिनों खूब जोरशोर से चलन है। महंगे फ्लैटों में ही नहीं मध्यम दर्जे के फ्लैटों में भी अब तेजी से वुडनफ्लोर्स दिखने लगे हैं।

सीमेंट द्वारा निर्मित फ्लोर का चलन अब बीते जमाने की बात हो चली है और मार्बल का फर्श भी धीरे- धीरे आउट डेटेड होता जा रहा है। ऐसे में वुडनफ्लोर्स का ट्रेंड प्रापर्टी डेवलपर्स के सिर चढ़कर बोल रहा है। पिछले दशक में संगमरमर के फर्श व टाइल फ्लोरिंग की जो धूम थी वही बात आज वुडन फ्लोरिंग के सम्बंध में भी कही जा सकती है। भारतीय घरों व बाजार में निरंतर अपने पैर पसारती वुडन फ्लोरिंग न केवल आपके घर की आंतरिक सज्जा में चार चांद लगाती है अपितु विभिन्न रंगों व फिनिश में आसानी से उपलब्ध होने के कारण घर व दफ्तर के फर्नीचर से भी मेल खाती है।

अनकही कहानी दिखाएगी राजकुमार राव की फिल्म 'प्रहार'

अभिनेता राजकुमार राव अपनी अपकमिंग फिल्म 'प्रहार' को लेकर चर्चा में आ गए हैं। हाल ही में इसका टीजर रिलीज किया गया है। दर्शकों से इस टीजर को अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। 'प्रहार' में वकील उज्जवन निकम की कहानी दिखाई गई है। उन्होंने 2008 के 26/11 हमले के आरोपी अजमल कसाब को फांसी दिलाने के लिए संघर्ष किया था। उन्होंने राजकुमार राव की तारीफ की है।

राजकुमार राव को लेकर क्या बोले उज्ज्वल निकम?

अपकमिंग फिल्म 'प्रहार' में राजकुमार राव ने वकील उज्जवल निकम की भूमिका निभाई है। ऐसे में उज्ज्वल निकम ने राजकुमार राव को लेकर कहा 'राजकुमार राव ने जबरदस्त एक्टिंग की है और अविनाश अरुण का निर्देशन बहुत प्रभावशाली है। 'प्रहार' न सिर्फ एक पब्लिक प्रॉसिक्यूटर के तौर पर मेरे सफर को, बल्कि एक पति और पिता के तौर पर मेरी जिंदगी को भी असलियत के साथ दिखाती है।'

अनजाने पहलू को दिखाती है फिल्म

उन्होंने आगे कहा 'लोगों को फैसले याद रहते हैं। उन्हें शायद ही कभी फैसले से पहले की रातें याद रहती हैं। 'प्रहार' उसी पहलू को दिखाती है, वह हिस्सा जो कभी किसी हेडलाइन में नहीं आया।' निकम ने कहा 'मैंने ऐसे केस लड़े हैं जिन पर पूरे देश की नजर थी और उस जिम्मेदारी के अकेलेपन के बारे में मैंने कभी बात नहीं की। यह फिल्म असल घटनाओं के प्रति ईमानदार रहती है। ऐसा करते हुए यह एक ऐसी कहानी कहती है, जिसे शब्दों में बयां करने के लिए मैंने खुद भी संघर्ष किया था।'

कब रिलीज होगी फिल्म

'प्रहार' में राजकुमार राव के अलावा वामिका गब्बी, सिकंदर खेर और जयदीप अहलावत भी हैं। यह 7 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इस फिल्म को मैडॉक फिल्म्स के दिनेश विजान ने प्रोड्यूस किया है।

स्टारकिड्स को बिना टैलेंट के भी मिलते हैं मौके

कृति सेनन इन दिनों अपनी हालिया रिलीज फिल्म 'कॉकटेल 2' को लेकर चर्चाओं में हैं। फिल्म को दर्शकों द्वारा पसंद किया जा रहा है और कृति के किरदार व एक्टिंग की भी काफी तारीफ हो रही है। मौजूदा वक्त में कृति इंडस्ट्री की टॉप लीडिंग एक्ट्रेस में से एक हैं। लेकिन एक आउटसाइडर होने के नाते कृति के लिए यहां तक का सफर आसान नहीं रहा।

हाल ही में हुई एक बातचीत में एक्ट्रेस ने बताया कि कैसे वे धीरे-धीरे कामयाबी की सीढ़ियां चढ़ीं और यह रातों-रात मिली सफलता की कहानी नहीं है। उन्होंने उन पलों को याद किया जब वे अपने पहले फोटोशूट और पहले रैंप शो के बाद रोई थीं, और बताया कि कैसे मुश्किलों के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी।

आसान नहीं था यह सफर

कृति ने अपने सफर को याद करते हुए कहा कि यह सफर आसान नहीं था। ऐसे पल भी आए जब मुझे खुद पर शक हुआ और मनचाहे मौके न मिलने पर निराशा हुई। यह सफर सीधे कामयाबी तक पहुंचने वाला नहीं था; यह धीरे-धीरे आगे बढ़ा। मैंने उतार-चढ़ाव देखे हैं। लेकिन मुझमें हार न मानने और दोबारा कोशिश करने का जज्बा भी रहा है। मेरा पहला फोटोशूट बहुत बुरा रहा था। मेरा पहला रैंप शो भी अच्छा नहीं हुआ था। दोनों बार मैं रोते हुए घर लौटी थी। लेकिन इसके बावजूद मैंने दूसरे शो, दूसरे फोटोशूट और दूसरे ऑडिशन के लिए कोशिश की और इसी वजह से मैं आज यहां तक पहुंच पाई हूं। सीखने की चाहत और हार न मानने का जज्बा ही मुझे यहां तक ले आया है।

टैलेंटेड हैं रणबीर कपूर और आलिया भट्ट

इस दौरान कृति ने नेपोटिज्म के बारे में भी बात की। उनका मानना है कि भले ही स्टार किड्स को भी रणबीर कपूर और आलिया भट्ट जैसे एक्टर्स की तरह खुद को साबित करना पड़ता है, लेकिन वे इस बात से सहमत हैं कि उन्हें अक्सर बाहरी लोगों की तुलना में बहुत आसानी से मौके मिल जाते हैं। उन्होंने कहा कि कई बार आपको पता चलता है कि किसी फिल्म के लिए आप पर विचार किया जा रहा है, लेकिन वह रोल किसी और को मिल जाता है। साथ ही सवाल सिर्फ नेपोटिज्म का नहीं है। फिल्मी बैकग्राउंड से आने वाले कई एक्टर्स सच में टैलेंटेड होते हैं। चाहे रणबीर कपूर हों या आलिया भट्ट, उन्होंने खुद को साबित किया है। हो सकता है कि उन्हें दूसरों के मुकाबले आसानी से मौके मिले हों, लेकिन उन्होंने कड़ी मेहनत की है और वे बहुत टैलेंटेड हैं। असल बात तब होती है, जब कोई बिना एक्टर के तौर पर खुद को साबित किए आठ या नौ साल तक मौके पाता रहता है। मुझे बस यही बात गलत लगती है। जब आप फिल्मी बैकग्राउंड से नहीं आते हैं, तो अगर आप शुरुआती कुछ साल में खुद को साबित नहीं कर पाते, तो आप बाहर हो जाते हैं। आपको नजरअंदाज कर दिया जाता है।

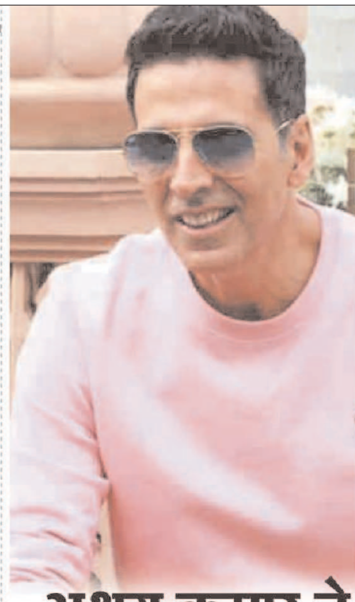

अक्षय कुमार ने बताया कैसे रोल करना चाहते हैं

अक्षय कुमार हाल ही में फिल्म 'भूत बंगला' में नजर आए थे। इस फिल्म से लोगों को डराने के बाद अक्षय अपने फैंस को हंसाने की तैयारी में हैं। वह अब फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' में नजर आएंगे, जो जल्द ही सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। इस फिल्म की रिलीज से पहले अक्षय कुमार ने फिल्म को लेकर कुछ खुलासे किए हैं।

अक्षय कुमार ने किसकी तारीफ की

अक्षय कुमार ने फरीदा जलाल की तारीफ करते हुए कहा कि इस फिल्म में सबसे शानदार कॉमेडी उन्होंने ही की है। अक्षय ने कहा, 'फिल्म में मेरे साथ कई बड़े कलाकार हैं, लेकिन फिल्म देखने के बाद दर्शकों को सबसे पहले फरीदा जी ही याद आएंगी। उन्होंने इस फिल्म में जो काम किया है, वह बिल्कुल लाजवाब है।' अक्षय ने आगे कहा, 'मैंने इस फिल्म को एक या दो बार नहीं, बल्कि कम से कम 35 बार देखा है, इसलिए मैं पूरे भरोसे के साथ कह रहा हूं कि सबसे बेहतरीन अभिनय उन्हीं का है। उनके बाद किरण कुमार जी का काम भी बहुत शानदार है।'

दिग्गज अभिनेत्री फरीदा जलाल एक बार फिर दर्शकों को हंसाने के लिए तैयार हैं। वह जल्द ही फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' में नजर आएंगी। दर्शकों को टीवी शो 'शरारत' में उनकी कॉमेडी बेहद पसंद आई थी। वह कई फिल्मों में नजर आ चुकी हैं इसलिए इस फिल्म में उन्हें देखने के लिए फैंस काफी उत्सुक हैं।

कैसे रोल करना चाहते हैं अक्षय

अक्षय कुमार ने इंटरव्यू में बताया कि बॉलीवुड में बिताए शुरुआती 10 साल में उन्होंने सिर्फ एक्शन हीरो के तौर पर काम किया और जमकर पैसा कमाया। इसके बाद अक्षय ने कॉमेडी, एक्शन और रोमांस जैसी हर तरह की फिल्में कीं। वह हर बार एक अलग तरह के किरदार को निभाना चाहते हैं। वह हर बार कुछ नया करना चाहते हैं।

2012 में 'बिट्टू बॉस' से बॉलीवुड में डेब्यू करने वाले पुलकित सम्राट ने 'फुकरे' से इंडस्ट्री में लोकप्रियता हासिल की। इसके बाद पुलकित कई फिल्मों का हिस्सा रहे हैं। हाल ही में पुलकित ने सलमान खान की एक खास सलाह के बारे में बात की, जिसने उनकी जिंदगी बदल दी। साथ ही पुलकित ने यह भी बताया कि बिना किसी मेंटर के इंडस्ट्री में आगे बढ़ना उनके लिए कितना मुश्किल रहा।

सलमान ने दी पुलकित को ये सलाह

पुलकित ने बताया कि अपनी पहली फिल्म के समय हर नए कलाकार की तरह फिल्म के रिलीज होने से पहले वह भी घबराए हुए थे, लेकिन सलमान की बातों ने स्टारडम के बारे में उनका नजरिया बदल दिया। उन्होंने कहा कि मैं बहुत घबराया हुआ था और सोच रहा था कि दर्शक फिल्म और मेरी परफॉर्मेंस को कैसा रिस्पॉन्स देंगे। सलमान भाई ने बस मेरी तरफ देखा और कहा, 'पुलकित, मैं सलमान खान हूं। यहां तक कि मुझे भी अपने अगले शुक्रवार की कोई गारंटी नहीं है। तो तुम खुद को क्या समझते हो? इसके बारे में टेंशन लेकर तुम क्या हासिल कर लोगे?' सलमान की इस सलाह से मुझे यह एहसास हुआ कि अगर उनके कद का कोई व्यक्ति बॉक्स ऑफिस पर सफलता की गारंटी नहीं दे सकता, तो मेरे लिए इस बात की चिंता या तनाव करने का कोई कारण नहीं है।

काम के प्रति सलमान के समर्पण के फैन हुए पुलकित

पुलकित ने आगे सलमान के काम के प्रति समर्पण की तारीफ करते हुए कहा कि वो 24 घंटे फिल्मों के बारे में ही सोचते रहते हैं। कभी-कभी जब उन्हें सिर्फ तीन घंटे की नींद मिल पाती है, तब भी वे अपने प्रोजेक्ट्स के बारे में ही सोचते रहते हैं। चाहे वह किसी किरदार के लिए सही व्यक्ति को चुनना हो या फिर किसी बड़े एक्शन सीन पर विचार करना हो जिसे दर्शक थिएटर में पसंद करें। उनके इस समर्पण को देखकर मुझे एहसास हुआ कि अगर मैं उनकी कामयाबी का 50% भी हासिल करना चाहता हूं, तो मुझे 500% ज्यादा मेहनत करनी होगी।

वीर अगर राजू हिरानी का बेटा है, तो इसमें उसकी क्या गलती?

एक्टर अरशद वारसी इस वक्त धमाल मचाने की तैयारी में हैं। उनकी तीन-चार फिल्में और एक सीरीज आ रही हैं। उन्होंने इंटरव्यू में कॉमेडी से लेकर राजकुमार हिरानी संग काम, स्टारकिड्स और आज के स्टैंडअप कॉमेडियंस पर बात की।

अपने तीस साल लंबे करियर में एक्टर अरशद वारसी ने हर तरह के किरदार निभाए हैं, मगर कॉमेडी के मामले में उनका कोई सानी नहीं है। निजी जिंदगी में भी कमाल का सेंस ऑफ ह्यूमर रखने वाले अरशद वारसी 'मुन्ना भाई एमबीबीएस', 'गोलमाल' और 'जॉली एलएलबी' जैसी यादगार कॉमेडी फिल्म फ्रेंचाइजी का हिस्सा रहे हैं। आने वाली दिनों में बड़े पर्दे पर वह 'गोलमाल 5', 'धमाल 4' और 'वेलकम टू द जंगल' जैसी फिल्मों में भी लोगों को हंसाने को तैयार हैं। वहीं, ओटीटी पर डार्क कॉमिडी सीरीज 'प्रीतम और पेड्रो' में इंस्पेक्टर पेड्रो की भूमिका में नजर आएंगे।

क्या इतनी सारी कॉमेडी फिल्मों के खुशनुमा माहौल ने अरशद को किसी तरह से बेहतर इंसान बनाया? इस पर वह कहते हैं, 'नहीं, नहीं, मैं हमेशा से ही खुशदिल इंसान हूं। मुझमें एक सेंस ऑफ ह्यूमर है और मेरे हिसाब से हर इंसान के लिए थोड़ा सेंस ऑफ ह्यूमर बहुत जरूरी है। आपको खुद पर हंसना आना चाहिए। आज लोग छोटी-छोटी बातों पर सीरियस हो जाते हैं, मैं वाकई चाहूंगा कि वो ऐसा ना करें। जिंदगी को ज्यादा सीरियसली न लें। वैसे ही, हम सबकी जिंदगी में बहुत सारी तकलीफें हैं। हालात अजीब से होते जा रहे हैं, इसलिए आप छोटी-मोटी चीजों को छोड़ना सीखें। हमारी कॉमेडी फिल्में देखें, खुश रहें।'

राजकुमार हिरानी और उनके बेटे संग काम का एक्सपीरियंस

सीरीज 'प्रीतम और पेड्रो' की एक खास बात यह है कि फिल्ममेकर राजकुमार हिरानी की इस डेब्यू सीरीज से उनके बेटे वीर हिरानी भी एक्टिंग में कदम रख रहे हैं। ऐसे में, पिता और बेटे दोनों की पहली फिल्म में काम करने के अनुभव पर पर अरशद ने अपने चुटीले अंदाज में कहा, 'मैं सोच रहा हूं कि उनके घर में जाकर रहने लगूं। कभी पिता से साथ काम पर चला जाऊं, कभी बेटे के साथ काम पर चला जाऊं (हंसते हैं)। असल में, मेरे लिए बहुत अच्छा अनुभव था। मुझे कभी नहीं लगा था कि वीर और मैं कभी साथ में काम करेंगे। 'मुन्ना भाई एमबीबीएस' की शूटिंग के दौरान वह 4 साल का बच्चा था लेकिन बहुत अच्छा लगता है कि वीर की पहली फिल्म में मैं हूं। मैं चाहूंगा कि वो जिंदगी में बहुत अच्छा करे और मुझे यकीन है कि वो करेगा।' वहीं, फिल्मी बच्चों के फिल्म का ही रास्ता अख्तियार करने की बहस पर वह पलटकर सवाल करते हैं, 'वह राजू हिरानी का बेटा है तो उसमें उसकी क्या गलती है? ये हमारे बच्चे हैं उसमें उनकी क्या गलती है? मैं ऐसे सोचता हूं। बाकी, सबका अपना नजरिया है।'

कॉमेडी के नाम पर दायरा क्रॉस नहीं कर सकते

इन दिनों एक ओर कॉमेडियन हास्य पर तरह-तरह के पाबंदियों का रोना रोते हैं, तो कॉमेडी के आपत्तिजनक और अश्लील होने को लेकर विवाद भी सामने आते रहते हैं। इस पर अरशद वारसी का मत एकदम साफ है कि आप दायरा नहीं क्रॉस कर सकते।

बकौल अरशद, 'आप साफ कॉमेडी लिख सकते हैं। थोड़ा सा मुश्किल होता है लेकिन यह संभव है। यह भी संभव है कि आप बिना किसी को ठेस पहुंचाए कॉमेडी करें। मैं अक्सर जोक मारता रहता हूं, बहुत कुछ कहता रहता हूं, पर मुझे पता है कि मैं वो लाइन कभी नहीं क्रॉस करूंगा जिससे किसी को तकलीफ हो। मुझे पता होता है कि मैं किससे कह रहा हूं और क्या कह रहा हूं, वह जानना जरूरी है। आप वो दायरा क्रॉस नहीं कर सकते।

साप्ताहिक जलसा
स्वयंसिद्धा

विष या अमृत ? आपको क्या चाहिए

छत्तीसगढ़ की अग्रणी महिला संस्था स्वयंसिद्धा – एक मिशन विद ए विजन पिछले सात वर्षों से हर सप्ताह संगीत, साहित्य, संस्कृति, स्वास्थ्य, सिनेमा, फोटोग्राफी, कानूनी सलाह जैसे समसामयिक विषयों पर नियमित स्तंभ चलाती आ रही है। हर मंगलवार को इन विषयों पर सार्थक परिचर्चा का आयोजन होता है ।अधिकारियों, नेताओं और मंत्रियों की बातें हम रोज सुनते हैं। पर आम गृहणियों और माताओं की नजर से दुनिया कैसी दिखती है, समसामयिक मुद्दों पर वे क्या सोचती हैं, इस पर शायद ही कभी बात हुई हो। स्वयंसिद्धा उन्ही विचारों को मुखर स्वर देती है।

संस्था प्रमुख डॉ.सोनाली चक्रवर्ती कहती है-" हर साल 30 जून को वैश्विक स्तर पर 'सोशल मीडिया दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य संचार, व्यापार और हमारे दैनिक जीवन पर सोशल मीडिया के गहरे प्रभाव को पहचानना और इसका जश्न मनाना हैइस दिवस की शुरुआत सबसे पहले वर्ष 2010 में लोकप्रिय समाचार और टेक्नोलॉजी वेबसाइट 'मैशेबल' द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य यह उजागर करना था कि कैसे सोशल मीडिया ने दुनिया भर में लोगों के संवाद करने, विचार साझा करने और जुड़ने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया हैसोशल मीडिया का प्रभाव यह पड़ा कि इसने दुनिया को एक 'ग्लोबल विलेज' में बदल दिया है, जिससे मीलों दूर बैठे लोग भी एक क्लिक पर आपस में जुड़ सकते हैं। डिजिटल मार्केटिंग, इन्फ्लुएंसर कल्चर और ई-कॉमर्स के जरिए इसने व्यापार और रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं ।सामाजिक मुद्दों और घटनाओं को मिनटों में दुनिया के सामने लाने में सोशल मीडिया एक बहुत बड़ी ताकत बन गया है। स्वयंसिद्धा समूह में हमने सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रयोग की शुरुआत 15 साल पहले कर दी थी पर कोरोना काल में इसकी असली उपयोगिता का पता चला जब हमने घरेलू महिलाओं को डिप्रेशन और निराशा से दूर रहकर रोजमर्रा के कार्यों में लगने के लिए व्हाट्सएप का सही प्रयोग शुरू किया अपने-अपने घरों से वीडियो बनाकर शॉर्ट फिल्म बनाई, गीत गाये,कोविड की जागरूकता और जानकारी को एक दूसरे से बांटा और यह कठिन समय पार कर गए। आज सोशल मीडिया की वजह से 10 राज्यों के 25 शहरों से हजार से अधिक महिलाएं हमसे सीधे तौर पर जुड़ी हुई है

संस्कृत शिक्षिका कमलेश आर्य कहती हैं

अथवर्वेद में एक मंत्र है,
अभयम् मित्रात ,अभयम् अमित्रात, अभयम्ज्ञातात अभयम् परोक्षात।

अर्थात ..मित्र से अभय हो, अमित्र से अभय हो, जिनको जानते हैं उनसे अभय हो , जिनको नहीं जानते उससे भी अभय हो। लेकिन होता इसके विपरीत है भय का वातावरण हर ओर नजर आता है। कई अच्छे संगठनों से हम जुड़े,तब हमको लगने लगा कि हम भी इंसान है, गलती कर सकते हैं और उन गलतियों से शिक्षा लेकर आगे अपनी जिंदगी में सुधार भी कर सकते हैं । सबसे पहले तो हम यूट्यूब से जुड़े फिर फेसबुक में। मीडिया पर अपनी कविताएं, कहानियां डालते रहते हैं। वहां की संगोष्ठियों में भाग लेते रहते हैं ।उनके साझा संग्रहों कविताओं और कहानियों में हमारी रचनाएं छपती रहती हैं । सोशल मीडिया का एक और उपहार हमको मिला है ,"जूम संगीत सभा" जिसमें हर हफ्ते, हम लोग एक नियत समय पर जुड़ते हैं और अपना गीत पेश करते हैं, अब हम तो 70 पर हो गए हैं, बच्चे हमसे दूर रहते हैं और हमारा अकेलापन भी इससे दूर हो जाता है। लेकिन छोटे बच्चों में जो इसकी लत पड़ रही है, वह विचारणीय विषय है । चैट जी पीटी के बारे में सुनकर हमने अपने बेटे से कहा कि यह ऐप हमारे फोन पर डाल दो,वह बोला जो आपका असली अनुभव है, उसी को लिखा करिए, एक बार इसकी लत पड़ गई तब आपकी अपनी प्रतिभा का प्रयोग नहीं हो सकेगा ? इसके बाद हमने उसका नाम भी नहीं लिया और अपने विचार जैसे भी हों हर प्लेटफार्म पर लिखते रहते हैं। हमारे समय में तो मोबाइल वगैरा का चक्कर नहीं था , हमारा संयुक्त परिवार था, हम सब अपने-अपने कामों में व्यस्त रहते थे। घर पर एक टीवी था जो बड़े देखते थे ,बच्चे और हम भी वही देखते थे।

मुझे लगता है बच्चों के साथ सकारात्मक ऊर्जा के साथ तालमेल बिठाकर रहा जाए, उनको जिंदगी के अनुभव लेने दिया जाए और हर चीज मोबाइल पर ना छोड़ी जाए, तब उनको मोबाइल की लत नहीं पड़ सकती ।सोशल मीडिया मेरे विचार में जहर नहीं बल्कि बहुत उपयोगी है बस उसको कैसे इस्तेमाल करना है और कब इस्तेमाल करना है इसका ज्ञान होना बहुत जरूरी है।

मुंगेली से गृहणी ज्योति गुप्ता कहती है – "मैं सुबह न्यूज पेपर सरसरी तौर पर देखती हूं ।शाम को अच्छे से पढ़ती हूं पढ़ना पूरा ना होने पर अलग रख देती हूं समय मिलने पर पढ़ती हूं।

क्योंकि समाचार पत्र की खबरों में ज्यादा सच्चाई होती है 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को बैन सही है बच्चो के शारीरिक ,मानसिक विकास के लिए बाधक हैं आनलाइन क्लास के लिए ही बच्चों को मोबाइल देना चाहिए

रुआंबांधा निवासी सीमा लदेर कहती है

-"सोशल मीडिया बड़ी काम की चीज है वहां हमें वही दृश्य दिखता है जो हम देखना सुनना या पढ़ना चाहते हैं हमें पूर्ण स्वतंत्रता देती है कि हमें अच्छाई देखनी है या बुराई हम ही हैं जो अपनी इच्छा से अपनी राह खुद तय करते हैं।

यह बता पाना थोड़ा कठिन होगा कि मैं दिन में कितनी बार फोन का इस्तेमाल करती हूं क्योंकि मैं उसे जरूर के हिसाब से इस्तेमाल करती हूं ।18 साल की उम्र से कम के बच्चों को सोशल मीडिया से दूर रखना मेरे ख्याल में गलत है क्योंकि आज के दौर में पढ़ाई से लेकर समाचार तक सब कुछ सोशल मीडिया पर ही है ऐसे में अपने बच्चों को सोशल मीडिया से दूर रखना मतलब उनको आसपास की जानकारी एवं ज्ञान से दूर रखना होगा। साथ ही साथ हमें अभी याद रखना जरूरी है की ज्यादातर अभद्र और गलत चीज सोशल मीडिया में 18 की उम्र के ऊपर के लोग डाल रहे हैं नीचे के नहीं और हमारा मकसद में अभद्र चीजों को रोकना है जानकारी को नहीं ।मेरे ख्याल में उम्र को ध्यान न देते हुए सभी पर प्रतिबंधन लगाना चाहिए जैसे सोशल मीडिया पर आईडी बनाते वक्त आपको अपना कोई पहचान पत्र डालना पड़े तथा किसी भी फर्जी नाम से कोई आईडी ना बनाई जा सके ताकि किसी फर्जी नाम के पीछे छुप कर लोग कुछ भी अभद्र या गलत ना कर सके ।सोशल मीडिया में जो जहर जैसे अभद्र टिप्पणी पॉडकास्ट या कॉमेडी पर सहमति देने के बजाय उनका बहिष्कार करना ही समाज के लिए दवा का काम कर सकता है

हुडको निवासी कलाकार रुमा दे कहती है

-"सोशल मीडिया सिर्फ रील और फोटो नहीं है। यह जोड़ने, सिखाने और बढ़ने का शक्तिशाली माध्यम है, इसका सदुपयोग करना चाहिए शिक्षा, सही जानकारी, स्वस्थ संवाद, व्यापार और रोजगार के लिए। सावधान रहना चाहिए फर्जी खबर, अफवाहें, लत, समय की बर्बादी, गोपनीयता का खतरे से। पैरेंट्स खुद स्क्रीन टाइम कम करें, बच्चों से फोन दूर रखें, उनसे बात करें कि वो क्या देखते/खेलते हैं सिखाएं कि इंटरनेट पर सब सच नहीं होता ।रात को फोन दूर रख कर सोना चाहिए। स्कूल में डिजिटल लिटरेसी जरूरी, क्योंकि ऑनलाइन क्लास के लिए मोबाइल देना मजबूरी है18 से कम उम्र पर बैन आसान नहीं, जागरूकता जरूरी है।

शासकीय वरिष्ठ व्याख्याता वैशाली कुलकर्णी कहती हैं

सोशल मिडिया ने जानकारी, सीखने और लोगों से जुड़े रहने के माध्यम को आसान बना दिया है, लेकिन समय का संतुलन बनाए रखना जरूरी है। हम फोन चेक करते ही रहते हैं और अब यह आदत हो गई है ।मेरा सबसे पुराना अकाउंट व्हाट्सअप हैं जो सबसे अधिक इस्तेमाल करती हूँ। मेरे विचार से केवल बैन समाधान नहीं है। बच्चों को माता-पिता और स्कूल द्वारा डिजिटल साक्षरता, ऑनलाइन सुरक्षा और जिम्मेदार उपयोग सिखाना अधिक आवश्यक है। यह किसी एक की नहीं, बल्कि प्लेटफॉर्म, माता-पिता, स्कूल और पूरे सिस्टम की साझा जिम्मेदारी हैं 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए सुरक्षित मोड और स्क्रीन टाइम की सीमा अनिवार्य होनी चाहिए ।सभी सोशल मीडिया पेड होने चाहिए। हर दिन कुछ समय बच्चों के साथ बिना मोबाइल के खाना खायें,उनकी बातें सुनें और उनके ऑनलाइन अनुभवों पर खुलकर चर्चा करना चाहिए। सोशल मीडिया का उपयोग केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि शिक्षा, अच्छी सोच, ज्ञान के लिए हो।

जमशेदपुर की नृत्यांगना एवं गृहणी अंजना सेनगुप्ता कहती है-

मै एक गृहिणी हूँ। सोशल मीडिया ने मेरी रोज की जिन्दगी में मदद की है। जैसे लोगो से संपर्क रखना, रेसिपी की जानकारी,देश-दुनिया की खबरे मिलना आदि।

सच बताऊँ तो कई बार इसी ने मेरी मदद की।

मेरा सबसे पुराना सोशल अकाउंट फेसबुक है।

मेरे विचार में 18 से कम उम्र वालो पर बैन सही है ।डिजिटल लिटरेसी सिखाना बहुत आवश्यक है। इससे बच्चे सोशल मीडिया को सही तरीके से इस्तेमाल कर पाएगें।

बच्चों का ऑनलाइन गैंग/गेम के चक्कर मे फंसना में अभिभावक और सिस्टम भी जिम्मेदार है। अगर मुझे सोशल मिडिया के लिए एक नियम लागू करना हो तो- वह अनिवार्य एल्गोरिथ्मिक चयन का नियम होगा। इससे कंपनिया अपना खुद का एल्गोरिदम आप पर थोप नहीं सकती। यूजर्स के पासपोर्ट मे एक बटन होना चाहिए, जिससे वे कंटेंट सुझाव इंजन को पूरी तरह से बंद कर सके।

शासकीय व्याख्याता श्रुति तिवारी कहती हैं

-"क्षमा चाहूँगी लेकिन सोशल मीडिया ने सोशल रहने ही कहां दिया है ? मनुष्य की सारी सम्वेदना मशीन तक ही रह गई।

जन्मदिन, शादी की सालगिरह, कोई सोशल नहीं। सब कुछ एक मैसेज में कैद। मैं व्यक्तिगत सोशल मीडिया के बहुत पक्ष में नहीं हूं लेकिन समय के साथ चलना भी आवश्यक है। कोई भी ताकत तभी उपयोगी है जब हम उसका सही प्रयोग करे वर्ना दुष्परिणाम हम देख ही रहे हैं।

वरिष्ठ व्याख्याता जयती वैद्य कहती हैं

सोशल मिडिया एक ऐसा माध्यम है जिसका सदुपयोग किया गया तो बहुत अच्छा और दुरुपयोग किया गया तो बहुत ही बुरा और हानिकारक हो सकता है।

घर में माता- पिता का अपने बच्चों के साथ समय बिताना और मीडिया के गुण और अवगुण दोनों की जानकारी देना बहुत जरूरी है।

अभद्र भाषा का जितना हो सके बहिष्कार होना ही चाहिए। टीवी सीरियल्स से लेकर फि ल्म्स तक गलत चीजों को दिखाया जा रहा है,एक ऐसा नियम लागू होना चाहिए जो इन सब पर रोक लगा सके।

सेक्टर-10 भिलाई निवासी ग्रहणी एवं गायिका सुदेशना बर्धन कहती हैं

-"आज हम सबका एक पल भी बिना मोबाइल और सोशल मिडिया के गुजरता नहीं है। क्योंकि सोशल मीडिया हमारे रोज के जिन्दगी में बिनोदन के साथ साथ जरूरत भी है। अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ संपर्क रखना,नए

चीजें सीखना स्वयंसिद्धा के स्तंभ में भाग लेना, मोबाइल बैंकिग यह सब सोशल मीडिया के कारण संभव हो रहा है।

मैं दिन में बहुत बार मोबाइल चेक करती हु। वाट्स अप का उपयोग मैं ज्यादा करती हूँ।

मुझे लगता है पेरेंट्स और स्कूल को डिजिटल लिटरेसी सिखानी चाहिए। क्योंकि अठारह से कम उम्र वाले को भी संवाद के लिए , अध्ययन के लिए सोशल मीडिया की जरूरत है।

बच्चा जब ऑनलाइन गेम या गैंग के चक्कर में फंसता है तो पहले जिम्मेदारी पेरेंट्स को लेना पड़ेगा ।सब से पहले सही गलत की सीख तो वही देंगे न।

सोशल मीडिया में कुछ ऐसा नियम होना चाहिए कि बच्चा उसके लिए गलत कुछ देख ही न पाए ।बहुत छोटा बच्चा के हाथ में मोबाइल देना या मोबाइल में विडियो दिखाकर खाना खिलाना नहीं चाहिए। पेरेंट्स को यह सब ध्यान रखना होगा।

धमतरी निवासी सामाजिक कार्यकर्ता संतोष लखोटिया का कहती है-

30 जून सोशल मीडिया डे है ।चलो हम और आप वार्तालाप करते हैं

आज मीडिया हम सब के लिये एक मजबूत स्तंभ है पर उसका उपयोग सही तरीके से हो तभी हमारे मन मतिष्क को विकसित कर सकता है । आजकल न उम्र है न लिहाज कोई भी कुछ भी मुख - पोथी पर डाल देते है ।बच्चे अच्छी बातें तो कम उलटा गलत बाते जल्दी सीख जाते है। आने वाले समय में हमें ये सब रोककर सही रास्ता दिखाना है। घर पर भी बच्चो को ये सब बताये एवं समय समय पर उनका मोबाइल चेक करते रहें।

स्मृति नगर निवासी कमल चक्रवर्ती कहती हैं-

-"मैं सोशल मीडिया में पहली बार व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़ी हूं और आज तक जुड़ी हुई हूं ।18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों पर बैन सही नही है क्योंकि जिस चीज के लिए मना किया जाता है तो उसके प्रति जिज्ञासा और बढ़ जाती है इसीलिए बैन न करके कुछ इस तरह से सेटिंग की जाये कि उनके लायक कंटेंट ही उनकी पहुंच में हो ।जब बच्चा आनलाइन गैंग/गेम में फंसे जाता है तो गलती किसी एक की नही होती बल्कि तीनों की होती हैं ।माता पिता बच्चों को फोन पकड़ा देते हैं और स्वयं नौकरी या व्यस्त रहते हैं ।प्लेटफार्म वालों को तो पैसा कमाना है इसके लिए वे बिना सोचे समझे कुछ भी दिखाते है और सिस्टम में भी कुछ कड़े नियम नहीं है इन सबका खामियाजा बच्चों और माता-पिता को भुगतना पड़ता है ।सिक्के के दो पहलू की तरह सोशल मीडिया के भी दो पहलू हैं। हम पर निर्भर करता है कि हम उससे कुछ सीखते हैं या कि सिर्फ और सिर्फ टाइम पास करने में उपयोग करते हैं ।मैं सरकार से अनुरोध करूंगी कि जिस तरह फिल्मों के लिए सेंसर बोर्ड है उसी प्रकार हर सोशल मीडिया पर परोसी जाने वाली सामग्री पर भी एक बोर्ड बने और उल्लंघन करने वालों के लिए कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान हो।

पैरेंट्स को बच्चों के साथ समय बिताना चाहिए और अपनी निगरानी में ही बच्चों को सोशल मीडिया का उपयोग करने देना चाहिए।

अंत में इतना कहना चाहूंगी कि सोशल मीडिया का कोई भी प्रकार किसी भी तरह से बुरा नही है बस उसका उपयोग समझदारी से करने की जरूरत है ।सोशल मीडिया के ही कारण हजारों किलोमीटर दूर बच्चों से एक सेकेंड में बात हो जाती है।

मोती चुगना या गंदगी इसके जिम्मेदार हम स्वयं हैं।

सेक्टर-4 निवासी शिक्षिका संध्या तिवारी कहती है

इस अवसर में मैं इतना ही कहना चाहूँगी कि सोशल मीडिया का प्रभाव हमारी जिंदगी में सकारात्मक और नकारत्मक दोनों तरह से हैं उसे हमें कैसे लेना हैं ये सिर्फ हम पर निर्भर करता हैं

मैं फेसबुक और इंस्टाग्राम पर आयीं जिसे मैंने सिर्फ.इंटरटेनमेंट पर्पस के लिये चुना पर धीरे-धीरे ये हमारे जीवन का हिस्सा बन गया जिसमें हम अपने ही लोगों से दूर होते चले गए

तो मेरा मतलब है कि सोशल मीडिया जरूरी होता हैं सिर्फ.हर चीज की जानकारी के लिऐइसको पूरा समय देना व्यर्थ हैं आपका क्वालिटी टाइम्स सिर्फ अपने काम और अपने लोगों के बीच में ही होना चाहिए 18 से कम उम्र वालों पर सोशल मीडिया और गेमिंग का बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता हैं इसलिए उनके लिए ये प्लेटफॉर्म पर बैन सही है क्योंकि सही और गलत के बीच क्या भिन्नता हैं उन्हें नहीं पता। इसमें उनकी मदद पेरेंट्स और सिस्टम दोनों को मिलकर करना चाहिऐ सिस्टम को चाहिए कि वो इसमें भी कुछ कड़े नियम लाए जिससे कई फेक आई डी बंद हो जायेंगे और क्राइम कम होने में भी असर पड़ेगा। पेरेंट्स अगर अंडर 18 को मोबाइल देते है तो वो उसको अपने ऑब्जरवेशन में रखे और बच्चों से खुलकर बात करे उनको हर प्रकार की जानकारी दे कि वह सोशल मीडिया को वो अपने लिए कैसे बेहतर बना सकते हैं बच्चों के मानसिक स्तर को बेहतर बनाने में सबसे बड़ा हाथ अभिभावक का ही होता है

भोपाल से शिक्षिका अनुश्री सरकार कहती है-

-"आज कल के युग में सोशल मीडिया ने अपनी जगह बना ली है ।सभी लोग काफी एक्टिव हो गए है ,चाहे वो यंगस्टर हो,हमारे जमाने के हो या फिर हमसे भी सीनियर ये प्लेटफार्म सभी के काम आ रही है। आज कल कोई भी एड डालना हो कही अपनी कोई जानकारी साझा करनी हो सभी इंस्टग्राम,फेसबुक,स्नैपचैट,टेलीग्राम, स्टोरी,स्टेटस के जरिए अपनी सारी गतिविधि साझा करते है ।ये प्लेटफार्म एक ऐसा प्लेटफार्म बन चुका है। लोग देश विदेश में होकर भी अपने लोगों की जानकारी प्राप्त कर लेते है ।कई ऐसे यूजर भी है जो इसका गलत इस्तेमाल कर रहे है,सोशल मीडिया मै कोई भी अनजान पोस्ट लाइक व शेयर न करे इससे कई स्केम भी हो चुका है साइबर क्राइम से रोकने की कोशिश भी की जा रही है, लेकिन हमे भी हमारे बच्चों को भी सचेत करना होगा। सोशल मीडिया में कोई भी पोस्ट डालने से पहले कई बार सोच लिया कीजिए क्या यह सही है या गलत है। मीडिया मै प्रिंट मीडिया धीरे धीरे खत्म के कगार पर ही है,उसकी जगह ये डिजिटल और सोशल मीडिया ने अपनी जगह बना लिया है। जिस तरह से टेक्नोलॉजी बढ़ रही है तो हमें सोशल तो होना ही पड़ेगा और सोशल मीडिया भी अपनाना पड़ेगा मेरा एक इवेंट होता है जिससे मैं अगर पेपर मीडिया में डालती हूं तो वह उतने लोग नहीं पढ़ते लेकिन सोशल मीडिया में डालती हूं तो काफी फर्क पड़ता है तो इसलिए आप सोच समझकर उसका इस्तेमाल कीजिए तो वह सही है।

तालपुरी निवासी पुनीता कौशल कहती है -

"सोशल मीडिया का उपयोग उद्देश्यपूर्ण व ज्ञानवर्धक हो तो बेहतर या मनोरंजन के लिए भी इसका उपयोग सीमित हो तो अच्छा लेकिन अकारण समय बिताने के लिए भ्रामक जानकारी फैलाना कुछ भी शेयर करना ग़लत है । हमारे स्वयंसिद्धा समूह मे जैसे अकारण पोस्ट डालने पर मनाही है, फॉरवर्डेड जानकारी या मैसेज भेजना मना है ,

यहाँ महिलायें स्वयं लिखकर किसी भी टॉपिक पर अपने विचार साँझा करती है ।

आज किसी भी पब्लिक जगह पर जाओ हर हाथ में मोबाइल चलाते लोग दिखते है, उनमें से बहुत कम होंगे जो जरूरी काम कर रहे होते है ,

बाकी लोग कोई भी वीडियो या रील्स या मैसेज फॉरवर्ड करते देखे जा सकते है ।

घर में आने पर फिर मोबाइल या टीवी की गिरफ्त में आ जाते है । इससे ना सिर्फ परिवार के सदस्यों का आपस में संवाद सही से होता है ना परिवार को क्वालिटी टाइम दे पाते है ।

बच्चो को कम उम्र में मोबाइल देना बहुत ही गलत है क्योंकि यह बच्चों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों पर असर डाल रहा है ।

यदि कोई स्कूल का मेसेज या क्लास ग्रुप होता है उसके माता या पिता को अपना नंबर ही देना चाहिए कुछ अपवाद हो सकते है यदि पैरेंट्स अधिक शिक्षित ना हो या इंग्लिश की जानकारी ना हो ।बच्चो को अलग मोबाइल दे तो पासवर्ड और उनकी गतिविधियों पर नजर रखें ।

मेरा पहला अकाउंट फेसबुक पर बनाया था ।14 साल पहले सीमित प्लेटफॉर्म्स या मीडिया नेटवर्क थे । मोबाइल दिन में जरूरत के हिसाब से या जब फ्री टाइम मिले तो चला लेती हूं ।

सुबह अखबार पढ़ने के बाद एक बार नोटिफिकेशनस देख कर जरूरी बैंक या स्कूल का या कोई परिवार का मेसेज हो तो रिप्लाई करके रख देती हूँ ।

मैंने सारे ग्रुप्स के नोटिफिकेशन को म्यूट कर रखा है,फैमिली का या कुछ जरूरी अकाउंट छोड़कर, इससे मैं बार बार मोबाइल उठाने से बच जाती हूँ अपनी सहूलियत से देखकर उपयोग में लेने की कोशिश करती हूँ ।अभी भी कुछ बच्चे या बड़े भी ऑनलाइन तरीके से बहुत कुछ सीखते है पढ़ते है तो ये सब हमेशा नुकसान दायक नहीं बस जरूरी है परिवार के साथ अपने विचार या व्यवहार को साझा करने की ।खुलकर बात करने की बच्चे प्रेरणादायक और सकारात्मक कंटेंट देखें , ना कि नफरत या अफवाह या अश्लील सामग्री

पोस्ट करने से पहले या शेयर करने से पहले ये जान ले की ये सच है ? इससे किसी का अहित तो नहीं ।संस्कार देना बहुत सीमा तक माता पिता की जिम्मेदारी है ।अपना और बच्चो का स्क्रीन टाइम कम रखें ।परिवार के साथ ज़्यादा समय बिताए पुस्तक पढ़ने की आदत डालें । बाहर शुद्ध हवा में टहलना भी जरूरी है ये नियम बने तो बेहतर होगा ।अगर सोशल मीडिया का सही इस्तेमाल हो याने कम स्क्रॉल,ज़्यादा सीखना कम तुलना , और दिखावा भी कम किया जाए तो ये दवा है वरना धीमा जहर ।

स्वयंसिद्धा समूह की कार्यकारी अध्यक्ष रीता वैष्णव कहती है-

स्वयंसिद्धा समूह की कायर्कारी अध्यक्ष रीता वैष्णव कहती है -"सोशल मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है ।आप खुद ही सोचिए हमें कितनी अच्छी अच्छी जानकारी मिलती हैं हमने बहुत कुछ अच्छा सीखा है ।हमारे दिमाग़ के विकास हुआ है ।मैं दिन में 10 बार तो मोबाइल चैक करती हूँ, और झूठ नहीं बोलती सबके ज़्यादा हमारे स्वयंसिद्धा के ग्रुप को चेक करती हूँ क्यों कि इसमें हमारे खुद के पाजेटिव स्तंभ चलते है ।जब से मैंने मोबाइल यूज करना शुरू किया है तब से लेकर आज तक मेरी एक ही सोशल मीडिया अकाउंट है।

छोटे बच्चों को मोबाइल से दूर रखना चाहिए, उनकी शारीरिक और मानसिक सेहत के लिए ।

स्कूल और पैरेंट्स को डिजिटल लिटरेसी सिखानी चाहिए ।अगर हम अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं तकनीकी ज्ञान तो बेहतर हैं ।अगर कोई बच्चा ऑनलाइन गैंग/गेम के चक्कर मे फँसता हैं तो सबसे पहले पैरेंट्स की गलती है। बच्चे पर ध्यान देना चाहिए कि वो मोबाइल पर किस तरह का वीडियो या गेम खेल रहा हैं ।सबसे और अहम सवाल का जवाब है इस तरह के सिस्टम ही नहीं रखना चाहिए की कोई भी बच्चा मोबाइल के जरिए मुसीबत में फँस जाए ।हम बच्चों को पहले की तरह खेल कूद, नैतिक शिक्षा दी जाए ताकि बच्चे स्कूल में जाकर पढ़ाई के अलावा कुछ बेसिक शिक्षा ग्रहण करें ।आजकल के बच्चे वैसे बहुत ज़्यादा दिमाग़ वाले होते हैं। छोटी सी उम्र में ही बहुत कुछ पढ़ाई के जरिए सीख जाते है। बस उनको सही और ग़लत का फर्क.समझना चाहिए ताकि वो बच्चे किसी के बहकावे में ना आये ।अपनी सुरक्षा खुद कर सके ।अच्छे पोस्ट को महत्त्व दे अच्छी जानकारी वाले विडियो को देखे

मोबाइल हमारे दिमाग़ को पढ़ लेता है और वो वही चीज हमें दिखाता है।

इस्पात नगर रिसाली निवासी शिक्षिका कुदसिया अली कहती है

- सोशल मीडिया ने एक तरह से हमारी रोज की ज़िंदगी अपनी बना ली है। क्योंकि सुबह उठते ही ईश्वर का नाम लेने के बाद आँख सीधे व्हाटसअप, फेसबुक वगैरह के नोटिफिकेशन पढ़ने में लग जाती है। मुझे दिन में कई बार फोन चेक करना पड़ता है क्यों कि कभी बेटी का मैसेज, तो कोई मेल आ गया तो कभी किसी पेरेंट की समस्या होती है तो कभी अपने भी कुछ रिश्तेदारों के मैसेज आते है। मैं इसलिए और चेक करती हु क्यों कि कोई अर्जेंट बात तो नहीं है, क्या पता कुछ हो और फोन नहीं लग रहा हो ।मेरा सबसे पुराना सोशल मीडिया अकाउंट फेसबुक है जिसे मैं आज भी यूज करती हु।

- *18 से कम उम्र वालों पर बैन सही है या नहीं

इस पर मैं ये कहना चाहूंगी कि हर अभिभावक को अपने बच्चे की मानसिक स्थिति पता होती है। हमारा बच्चा कितनी चीज जल्द सीख रहा है, चाहे वो अच्छी हो या बुरी। जब ये पता है तो नकारात्मक चीज सीखने नहीं देते ।परंतु जैसे के आजकल चलन है बच्चों को अपना मोबाइल दिया जाता है जिसमें वह सोशल मीडिया से वाकिफ हो जाते है। इस पे अंकुश तब लगेगा जब पेरेंट्स जागरूक करेंगे उनको भी कि 18 की उम्र में पहुंचने के बाद ही ये सब करना उचित है।

इसमें गलती अभिभावक की पहले है क्यों कि उन्हें जानकारी होनी चाहिए उनका बच्चा क्या देख रहा है या क्या खेल रहा है।

अगर मुझे सोशल मीडिया के लिए 1 नया नियम बनाना हो, तो सबसे पहले ये कि सिर्फ जरूरत के अनुसार उपयोग हो पाये और बच्चों के पहुंच से दूर हो

सोशल मीडिया के बाहर भी जिन्दगी है, बच्चों को ये समझाए कि फ्रेंड्स ,रिश्तेदारों से पर्सनल इंटरैक्शन जरूरी है न कि सोशल मीडिया पे। और जो दोस्त आप बनाये वो सोशल मीडिया वाले न हो, उनको आप पर्सनली मिले हो, वर्चुअल नहीं।

दान का महत्व और आधार

अयोध्या के परम पावन तीर्थ प्रभु श्री राम लला के मंदिर में दान के पैसों की चोरी को लेकर पूरे देश में क्षोभ का वातावरण है , भक्तों की भावनाओं पर भयंकर आघात हुआ है और हर राम भक्त उद्वेलित है , विषय मिडिया में सुर्खियों पर है चोरी की जानकारी सार्वजनिक होने , एस आई टी के गठन होने , एस आई टी की जांच , एफ आई आर और गिरफ्तारियों के बाद भी मिडिया में ये विषय थमा नहीं है देश के लाखों समाचार पत्रों और सैकड़ों न्यूज चैनलों में आज तक ये विषय सुर्खियां लिए हुए है लेकिन चर्चा का विषय चोर , चोरी , ट्रस्ट , चम्पत राय , भा ज प , विश्व हिन्दू परिषद् , आर एस एस , आरोप -प्रत्यारोप , सत्ता पक्ष - विपक्ष तक ही सीमित है। जो विषय समाज से जुड़ा है उस पर चर्चा नहीं है , धर्म पर चर्चा नहीं है आस्था पर चर्चा नहीं है आडम्बर पर चर्चा नहीं है , दान की चोरी पर चर्चा है दान पर चर्चा नहीं है , दान के औचित्य और आधार पर चर्चा नहीं है ! तो आइये आज हम चर्चा करते हैं दान के औचित्य और आधार पर , आइये जानते हैं दान के औचित्य पर हमारे धर्म ग्रन्थ क्या कहते हैं ?

धर्मस्य मूलं दानम्।अर्थात - दान ही धर्म का प्रमुख आधार है। दानेन भूतानि वशीभवन्ति ।दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम्॥ अर्थात - दान से प्राणी प्रसन्न होते हैं और दान के प्रभाव से वैरभी समाप्त हो जाता है ।अब जानते हैं दान के आधार को - पात्रे दानं महद्दानम्।अर्थः योग्य पात्र को दिया गया दान ही वास्तव में महान दान है ।सुपात्रे दत्तमल्पं हि बहु भवति भारत।

अपात्रे तु हुतं दानं न तद्भवति फलप्रदम्॥अर्थः हे भारत ! सुपात्र को दिया गया थोड़ा-सा दान भी बहुत बड़ा फल देता है, जबकि अपात्र को दिया गया बड़ा दान भी फलदायक नहीं होता ।अन्नदानं परं दानं विद्यादानमतः परम्।अन्नेन क्षणिका तृप्तिर्विद्यया अमृतमश्नुते ॥अर्थात - अन्नदान श्रेष्ठ है, किन्तु विद्यादान उससे भी श्रेष्ठ है। अन्न से थोड़े समय के लिए तृप्ति मिलती है, जबकि विद्या जीवनभर और अमृततुल्य फल देती है ।इन सबसे ये तो बड़ा स्पष्ट है कि दान के विषय में हमारे ग्रन्थ बड़े स्पष्ट हैं कि दान करना जितना महत्वपूर्ण है उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है सुपात्र को दान करना अर्थात आपके द्वारा दिए गए दान का सदुपयोग होना। आज हमारे समाज के लिए चिंतन का विषय ये होना चाहिए कि हमारे द्वारा किये जाने वाले दान मात्र धार्मिक आस्थाओं के आधार पर किया जा रहा है जहाँ हम अपने दान या चढ़ावे की राशि के उपयोगिता को लेकर पूर्णतः उदासीन हैं। अपनी अंध श्रद्धा से वशीभूत होकर , दान के प्रतिफल में कुछ और अधिक पाने की लालसा में , अपनी विशिष्ट कामना पूर्ती के लिए या फिर भय के आधार पर हम दान कर रहे हैं। हमारे द्वारा किये जाने वाले दान ज्यादातर मंदिरों , धर्म गुरुओं / कथावाचकों और साधू संतों को जाते हैं यहाँ दान कर हम अपने कर्तव्यों की पलना से संतुष्ट हो जाते हैं कि हमने अपने दान धर्म का पालन कर लिया और अपनी आत्ममुग्धता में विचार ही नहीं करते कि हमारे द्वारा किये गए दान की राशि अथवा वस्तु का उपयोग क्या हो रहा है ? आज भारत के कई मंदिर और धर्म गुरु ऐसे हैं जिनके पास अरबों रुपयों की अकूत संपत्ति है किन्तु उस संपत्ति का समाज हित में क्या उपयोग हो रहा है इसका चिंतन कहीं नहीं है। हमने कभी ये विचार ही नहीं किया कि भगवान्‌को दान करने या चढ़ावा चढाने का औचित्य क्या है जबकि हम जानते हैं और मानते भी हैं की हमारे पास जो कुछ है वो भगवान्‌का दिया है तो फिर जिसने आपको सबकुछ दिया उसमे से थोड़ा बहुत उसे लौटा कर आप क्या करना चाहते हैं क्या हमारे भगवन या फिर हमारे ग्रन्थ ये कहते हैं कि आप उन्हें धन चढ़ाएं। हमारे समाज की सबसे बड़ी कमजोरी ये है कि हम स्वयं के धमर्पारायण होने का मिथ्या बोध पालते हैं जबकि वास्तव में हम धमर्भीरू हैं। हमारे समाज में हर किसी के लिए प्रयोग होने वाला ये सहज प्रचलित वाक्य है , मैं सिर्फ भगवन से डरता हूँ ! अरे भाई भगवान्‌से क्यों डरते हो ? डरो तब जब आप अधर्मी हो यदि आप धर्मी हो तो भगवान से डरो मत भगवान्‌से प्रेम करो उस पर आसक्ति रखो उससे लगन लगाओ। दूसरा वाक्य है , मैं भगवान्‌को मानता हूँ ! भाई भगवान्‌को मत मनो ! भगवन को मानकर कुछ भी नहीं पा सकते ! अगर मानना ही चाहते हो तो भगवन की मनो ! भगवान को मानाने और भगवान की मानाने के अंतर को समझो ! उदाहरण के लिए आप राम को मानते हैं , शिव को मानते हैं और उनको पूजते हैं नियमित पूजन अर्चन अभिषेक करते हैं और उनके बताये मार्ग पर नहीं चलते उनके चरित्र का उनके कृतित्व का अनुसरण नहीं करते तो भी क्या पूजन अर्चन और अभिषेक से आप उन्हें पा सकते हैं ? कदापि

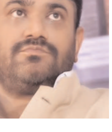

नहीं !अब देखिये जिस राम ने पितृ आज्ञा के पालन में राज पाठ तक का त्याग कर दिया अपना पूरा यौवन वल्कल वस्त्र में वनों में व्यतीत कर दिया उसे आप स्वर्ण रजत जवाहरात चढ़ा रहे हैं। जिस महादेव ने लोक कल्याण के लिए विष पी लिया ,बाघम्बर , चिता की राख और विषैले नाग जिसका श्रृंगार हैं उनके मंदिर में रुपये पैसे सोने चांदी हीरे जवाहरात चढ़ाए जा रहे हैं। ऐसा कतई नहीं है कि किसी भी धर्मस्थल में दान नहीं करना चाहिए यदि किसी भी धर्म स्थल में आपकी दान की हुई राशि का उपयोग लोक कल्याण में हो रहा है तो निश्चित रूप से वहां दान करना चाहिए उदाहरण के लिए सिख गुरुद्वारों में धर्म के नाम पर दान की राशि से बारहों महीने लोक कल्याण के काम होते हैं लंगर भूखों को भोजन करवाया जाता है ,न्यूनतम मूल्य पर और जरूरत मंदों के लिए निशुल्क भी स्वास्थ्य और चिकित्सा सेवाएं प्रदान की जाती हैं। देश के किसी भी कोने में हर आपदा में राहत और सेवा पंहुचाई जाती है मानव सेवा ही धर्म का मूल आधार है लेकिन क्या देश के बाकी सभी धर्मस्थलों और धर्म गुरुओं द्वारा दान की राशि से ऐसे लोक कल्याणकारी कार्य किये जाते हैं ? यदि नहीं तो फिर ऐसी जगह दान का क्या औचित्य ? आज इस देश में सब से बड़ा और सबसे लाभप्रद कोई कारोबार है तो वो धर्म का कारोबार है। अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में संघर्ष करता समाज के गरीब से गरीब और धनि से धनि वर्ग का हर आदमी अपनी आवश्यकता ,लोलुपता और महत्वाकांक्षा के जाल फंस कर मंदिरों और धमर्गुरुओं से अपने कष्टों की निवारण की अपेक्षा रखता है और दान दक्षिणा चढ़ावे के माध्यम से वो कष्टों से छुटकारा पाना चाहता है यहाँ फिर वही सिद्धांत लागू होता है भगवान को नहीं भगवान की मानिये। आप राम को मानते हैं इसीलिए आप सोचते हैं भगवान राम के मंदिर में चढ़ावा चढ़ाने पर राम आपके कष्ट हर लेंगे वहीं यदि आप राम को ना मान कर राम की मानेंगे तो पाएंगे की राम ने तो पृथ्वी पर स्वयं भी बहुत कष्ट झेला। यदि आप राम की मानेंगे तो स्वयं जान लेंगे कि यदि मनुष्य का जीवन मिला है तो इस पृथ्वी पर कष्ट और आनंद दोनों ही मिलेंगे किन्तु जिस तरह राम ने कष्ट भरे दिनों में भी दंडकारण्य के ऋषियों , सती अनुसुइया ,शबरी और वानर राज सुग्रीव का कल्याण कर स्वयं के कष्टों की अनुभूति को संकुचित कर दिया वैसे आप भी कष्ट में मंदिरों बाबाओं में चढ़ावा न चढ़ा कर उसी राशि को अनाथ आश्रमों , निर्धन छात्रों की पढाई , जरूरतमंद रोगियों की चिकित्सा , दिव्यांगों के जीविकोपार्जन की व्यवस्था जैसे लोक कल्याण का काम करें तो आप वास्तविक रूप में भगवान को पा लेंगे अन्यथा आप चढ़ावा चढ़ाते रहेंगे और पापी उसे खाते रहेंगे इसलिए आवश्यकता है धर्म आस्था और आडम्बर के भेद को समझने की और राम ' को ' ना मान कर राम ' की ' मानने की।

नंदिनी नगर में 5.189 किलो गांजा के साथ दो तस्कर गिरफ्तार, भेजा जेल

दुर्ग पुलिस ने 2 .80 लाख की सामग्री जब्त की, दोनों आरोपी जेल भेजे गए

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

नंदिनी नगर थाना पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान बड़ी कार्रवाई करते हुए 5.189 किलोग्राम अवैध गांजा के साथ दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों से गांजा और मोटरसाइकिल सहित कुल 2.80 लाख रुपये की सामग्री जब्त की गई है।

मुखबिर की सूचना पर घेराबंदी

30 जून को थाना नंदिनी नगर पुलिस ग्राम मुरमुंदा आम रोड पर अवैध वस्तुओं के परिवहन की रोकथाम के लिए वाहन चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि मोटरसाइकिल क्रमांक उऋ04 टऋ0156 में दो व्यक्ति गांजा का परिवहन कर रहे हैं। पुलिस ने तत्काल घेराबंदी कर संदेहियों को रोका।

रायपुर के सरोरा गांव के निवासी

पूछताछ में आरोपियों ने अपना नाम सन्नी साहू उर्फ माया साहू, उम्र 27 वर्ष और त्रिलोचन साहू उर्फ जय प्रकाश, उम्र 30 वर्ष बताया। दोनों ग्राम सरोरा, थाना उरला, जिला रायपुर के निवासी हैं। तलाशी में उनके कब्जे से 5.189 किलोग्राम गांजा बरामद हुआ। पुलिस ने परिवहन में प्रयुक्त मोटरसाइकिल भी जब्त कर ली।

एनडीपीएस एक्ट में केस दर्ज

आरोपियों के खिलाफ थाना नंदिनी नगर में अपराध क्रमांक 209/2026 के तहत धारा 20(बी) एनडीपीएस एक्ट में प्रकरण दर्ज किया गया। दोनों को 30 जून को न्यायालय में पेश कर न्यायिक रिमांड पर केंद्रीय जेल दुर्ग भेज दिया गया। जब्त गांजाः 5.189 किलोग्राम, अनुमानित कीमत 2,50,000 रुपये
मोटरसाइकिलः क्रमांक उऋ 04 टऋ 0156, अनुमानित कीमत 30,000 रुपये कुल जब्तीः 2,80,000 रुपये पुलिस के अनुसार आरोपी अवैध आर्थिक लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से गांजा का परिवहन कर रहे थे। कार्रवाई में थाना नंदिनी नगर पुलिस और यातायात पुलिस की सराहनीय भूमिका रही। दुर्ग पुलिस ने आम नागरिकों से मादक पदार्थ, अवैध शराब, जुआ, सट्टा और ऑनलाइन सट्टा जैसी अवैध गतिविधियों से दूर रहने की अपील की है। किसी भी अवैध गतिविधि की सूचना निकटतम पुलिस थाना या नशा मुक्ति हेल्पलाइन 1933 पर दें। सूचना देने वाले की पहचान गोपनीय रखी जाएगी।

बम्हनीडीह नगर पंचायत के नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधि कल लेंगे शपथ

रायपुर। नगर पंचायत बम्हनीडीह के नवनिर्वाचित अध्यक्ष और पाषर्दों का शपथ ग्रहण समारोह 2 जुलाई, गुरुवार को प्रातः 10:30 बजे आईटीआई ग्राउंड, बम्हनीडीह में आयोजित होगा। समारोह में नवनिर्वाचित अध्यक्ष रमेश कुमार डडसेना सहित सभी पार्षद पद एवं गोपनीयता की शपथ लेंगे। समारोह के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता उपमुख्यमंत्री अरुण साव करेंगे। जिले के प्रभारी मंत्री एवं वित्त मंत्री ओ.पी. चौधरी, कौशल विकास एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री गुरु खुशवंत साहेब तथा जांजगीर-चांपा सांसद कमलेश जांगड़े अति विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहेंगे ।कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ हाउसिंग बोर्ड के अध्यक्ष अनुराग सिंहदेव, छत्तीसगढ़ राज्य खनिज विकास निगम के अध्यक्ष सौरभ सिंह, जैजैपुर विधायक बालेश्वर साहू, पूर्व नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल, पूर्व संसदीय सचिव अम्बेश जांगड़े तथा जिला पंचायत जांजगीर-चांपा की अध्यक्ष इंजी. सत्यलता आनंद मिरी विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होंगे।

10 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर से लौटे दुर्ग कांग्रेस अध्यक्ष धीरज बाकलीवाल, राहुल गांधी से मिले

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा अभनपुर में आयोजित 10 दिवसीय संगठनात्मक प्रशिक्षण शिविर का समापन हो गया। शिविर में दुर्ग शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष धीरज बाकलीवाल ने भाग लिया। उन्होंने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल से मुलाकात की।

प्रशिक्षण के पहले दिन राहुल गांधी ने जिला कांग्रेस अध्यक्षों से संवाद किया। उन्होंने संगठन की मजबूती, वतर्मान राजनीतिक परिस्थितियों और आगामी रणनीतियों पर चर्चा की। राहुल गांधी ने कहा कि कांग्रेस का प्रत्येक पदाधिकारी जनता की आवाज बने। अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचे और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए संघर्ष करे। उन्होंने जोर दिया कि संगठन का निर्माण जनसेवा, पारदर्शिता, अनुशासन और निरंतर संवाद से होता है। शिविर के दौरान सभी जिलाध्यक्षों को अभनपुर विधानसभा के ग्राम लखना में श्रमदान एवं जनसंपर्क कार्यक्रम में शामिल किया गया। मनरेगा कार्यस्थल पर श्रमिकों के साथ लगभग दो घंटे तक श्रमदान किया गया। इसका उद्देश्य नेताओं को सीधे समाज और श्रमिक वर्ग से जोड़ना था। धीरज बाकलीवाल ने राहुल गांधी और केसी वेणुगोपाल को दुर्ग शहर कांग्रेस द्वारा बूथ सशक्तिकरण अभियान, संगठन विस्तार, जनआंदोलनों और सामाजिक कार्यक्रमों की जानकारी दी। वरिष्ठ नेतृत्व ने दुर्ग शहर कांग्रेस की सक्रिय कायर्शैली की सराहना की। प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट ने भी बाकलीवाल के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि मजबूत संगठन ही कांग्रेस की सबसे बड़ी ताकत है ।प्रशिक्षण से लौटने के बाद धीरज बाकलीवाल ने कहा कि यह शिविर केवल संगठनात्मक प्रशिक्षण नहीं बल्कि जनसेवा और अनुशासन की नई सीख देने वाला

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100